हिन्दी सांध्य दैनिक

# प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्ष: 8, अंक: 318, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 20 मई, 2024 दिन सोमवार गाजीपुर/वाराणसी

## देश के परमाणु हथियारों को खत्म कर देगा इंडी गठबंधन : अमित शाह

### यह चुनाव एक महान भारत की रचना, सुरक्षित और सशक्त भारत बनाने का संकल्प लेने का है

प्रयागराज। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को मेजा के सोरांव में चुनावी जनसभा में इंडी गठबंधन पर तीखा हमला किया। शाह ने इंडी गठबंधन पर धारा 370 की वापसी की मंशा रखने, पाकिस्तान को सम्मान देने और परमाणु हथियारों को नष्ट करने का एजेंडा बनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि यह चुनाव एक महान भारत की रचना का है। सुरक्षित और सशक्त भारत बनाने का संकल्प लेने का है। ऐसे में जनता नेतृत्व विहीन गठबंधन की राजनीति को समझ चुकी है। इस बार के चुनाव में 400 पार से भी अधिक सीटें जीत कर देश की जनता पीएम मोदी को तीसरी बार भारत के सशक्त प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहती है।

चिलचिलाती धूप में मेजा के सोरांव गांव के हेलीपैड पर गृह मंत्री अमित शाह का हेलीकॉप्टर दोपहर 12:34 बजे उतरा। मंच पर चढ़ते ही अमित शाह ने बिना किसी औपचारिकता के सीधे माइक संभाल लिया। उन्होंने प्रयागराज की पावन धरा को नमन करने के साथ ही अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद, लाल पद्मधर और राष्ट्र निमार्ता महामना पंडित मदन मोहन मालवीय को याद किया। उन्होंने महाकवि निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और हरिवंश राय बच्चन जैसे अमर साहित्यकारों को भी याद किया। शाह ने कहा कि यह पावन भूमि हमेशा से समरसता और प्रेम को समर्पित रही है। गृह मंत्री ने श्रृंगवेरपुर धाम, भारद्वाज मुनि आश्रम, झूंसी के उल्टा किला के सांस्कृतिक वैभव को भी याद किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र की जनता ने हमेशा से सोच समझकर सटीक और मजबूत निर्णय लिया है। उन्होंने जनता से पूछा- क्या आप देश में मजबूत प्रधानमंत्री चाहते हैं या हर साल में बदलने वाला पांच बार में पांच प्रधानमंत्री। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री बनने का सपना देखने वाले इंडिया गठबंधन के नेताओं में अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, ममता दीदी, खड़गे और राहुल बाबा क्या कभी प्रधानमंत्री बन सकते हैं? क्या जनता ने उत्तर दिया- नहीं। फिर जनता मोदी का जय घोष करने लगी। अमित शाह ने कहा कि इंडी गठबंधन के नेता खुलेआम कह रहे हैं कि उनकी सरकार बनेगी तो कश्मीर से धारा 370 को फिर वापस ले आएंगे। इंडिया गठबंधन के नेता मणि शंकर अय्यर पाकिस्तान को सम्मान देने की बात कह रहे हैं। वह कहते हैं कि इसलिए पाकिस्तान को सम्मान देना चाहिए क्योंकि उसके पास परमाणु हथियार है। जबकि इंडिया गठबंधन वाले देश में परमाणु हथियारों को खुद खत्म करना चाहते हैं। ऐसे में इनकी मनसा क्या है यह आपको बताने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। शाह ने कहा कि सोनिया गांधी खरगे और राहुल बाबा को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्योता दिया गया था, लेकिन उन्होंने उस निमंत्रण को ठुकरा दिया। पीएम मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद न सिर्फ राम मंदिर का मुकदमा सुप्रीम कोर्ट से जीता है बल्कि वहां प्राण प्रतिष्ठा करके भारत के आध्यात्मिक सांस्कृतिक गौरव को विश्व में स्थापित कर दिया।

शाह ने कहा कि पंडित केसरी नाथ त्रिपाठी ने इस क्षेत्र में बहुत काम किया है। भाजपा ने इस बार केसरी नाथ त्रिपाठी के पुत्र युवा प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी को अपना उम्मीदवार बनाया है। आप अपना वोट देकर नीरज त्रिपाठी को सिर्फ सांसद नहीं बनाएंगे, बल्कि तीसरी बार मोदी को प्रधानमंत्री भी बनाकर देश को सौंपने का काम करेंगे।

## पतंजलि की सोन पापड़ी का सैंपल फेल, एजीएम समेत तीन को जेल

पिथौरागढ़। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट पिथौरागढ़ संजय सिंह की अदालत ने पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड कंपनी के असिस्टेंट जनरल मैनेजर (एजीएम), डिस्ट्रीब्यूटर कान्हा जी प्राइवेट लिमिटेड के असिस्टेंट मैनेजर और एक व्यापारी को छह-छह माह की सजा सुनाई। कोर्ट ने तीनों पर कुल 40 हजार का अर्थदंड भी लगाया। अर्थदंड न देने पर दोषियों को अतिरिक्त कारावास भुगतना पड़ेगा। खाद्य सुरक्षा विभाग ने 17 अक्तूबर 2019 को बेड़ीनाग से इलाइची सोन पापड़ी का नमूना लेकर जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया था। यहां नमूना असुरक्षित श्रेणी का पाया गया था। प्रदेश की प्रयोगशाला की जांच रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं होने पर पतंजलि ने इस नमूने की जांच के लिए रेफरल लैब गाजियाबाद (भारत सरकार) को भेजा था। यहां भी नमूना फेल पाया गया जिसके बाद खाद्य सुरक्षा विभाग ने 28 जुलाई 2021 में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में वाद दायर कराया था।

## ममता और कांग्रेस पर जमकर बरसे पीएम मोदी बोले- भ्रष्टाचारियों की जिंदगी जेल में ही बीतेगी

कोलकाता। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को बंगाल के पुरुलिया में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए भ्रष्टाचार के मुद्दे पर कांग्रेस से लेकर राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) पर जोरदार प्रहार किया। पीएम ने कहा कि कांग्रेस व तृणमूल के मंत्रियों व नेताओं के घरों से नोटों के पहाड़ मिल रहे हैं, ऐसा दृश्य देश ने कभी नहीं देखा था। मोदी ने कहा कि मैंने 2014 और 2019 के चुनाव के समय देशवासियों से भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्रवाई का वादा किया था। 2024 में फिर कह रहा हूं कि भ्रष्टाचारियों को बिना जेल के नहीं रहने दूंगा। पीएम मोदी ने गारंटी देते हुए कहा कि चार जून के बाद नई सरकार बनते ही भ्रष्टाचारियों की जिंदगी जेल में ही बीतेगी। पीएम ने यह भी कहा की जिन गरीबों का पैसा लूटा गया है वे उन्हें उसे वापस लौटाने के लिए कानूनी रास्ते तलाश रहे हैं। मोदी ने कहा कि चार जून अब बहुत दूर नहीं है और अभी मैंने हेलीकाप्टर से उतरकर देखा इतने लोग थे कि मैं उनके दर्शन करने के लिए चला गया। ये (इंडी गठबंधन वाले) दिल्ली में एयर कंडीशनर कमरे में बैठकर अपना दिमाग खपाते हैं। बेकार में समय खराब मत करो, ये दृश्य देख लो, चार जून को क्या होने वाला है। पीएम ने कहा कि

इंडी गठबंधन वालों के तरकश में जितने तीर थे, ये लोग चला चुके हैं लेकिन जनता-जनार्दन के सुरक्षा कवच के आगे इनका हर तीर, इनकी हर साजिश नाकाम साबित हुई है। मोदी ने इन चुनावों में इंडी गठबंधन वालों का कच्चा-चिट्ठा खोलकर देश के सामने रख दिया है। पीएम ने तृणमूल पर जोरदार हमला बोलते हुए कहा कि टीएमसी ये कहकर राजनीति में आई थी कि 'मां, माटी, मानुष' की रक्षा करेगी। आज टीएमसी मां, माटी और मानुष का ही भक्षण कर रही है। बंगाल की महिलाओं का भरोसा टीएमसी से टूट गया है। संदेशखाली में जो पाप हुआ है, उसने पूरे बंगाल की बहनों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। एससी-एसटी परिवार की बहनों को तो टीएमसी के लोग इंसान ही नहीं समझते। अपने शाहजहां को बचाने के लिए टीएमसी के लोग संदेशखाली की बहनों को ही दोषी ठहरा रहे हैं। उनके चरित्र पर सवाल उठा रहे हैं। जैसी भाषा ये लोग उनके लिए बोल रहे हैं, इसके जवाब में बंगाल की हर बेटी अपने वोट से टीएमसी को तबाह कर देगी। मोदी ने बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी द्वारा रामकृष्ण मिशन व भारत सेवाश्रम संघ के कुछ साधु-संन्यासियों पर सीधे तौर पर राजनीति करने का आरोप लगाए जाने को लेकर भी घेरा। कहा कि चुनाव में बंगाल के लोगों को डराने-धमकाने, हिंसा कराने वाली टीएमसी सरकार ने इस बार सारी हदें पार कर दी हैं। आज देश और दुनिया में इस्कान, रामकृष्ण मिशन और भारत सेवाश्रम संघ सदाचार के लिए जाने जाते हैं। वे भारत का नाम रोशन करते हैं लेकिन आज बंगाल की मुख्यमंत्री इस्कान वालों को, रामकृष्ण मिशन वालों को और भारत सेवाश्रम के सन्यासियों को खुले तौर पर धमका रही हैं।

## बेकाबू हुई भीड़, बैरीकेडिंग तोड़कर मंच पर पहुंची- नाराज होकर बिना भाषण दिए लौटे अखिलेश और राहुल

प्रखर प्रयागराज। फूलपुर लोकसभा क्षेत्र में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव और कांग्रेस नेता राहुल गांधी की संयुक्त जनसभा में भीड़ अनियंत्रित हो गई और बैरिकेडिंग तोड़कर मंच तक पहुंच गई। माइक टूट गया। बिजली व्यवस्था भी बाधित हो गई। दोनों नेता बहुत लोगों को समझते रहे और व्यवस्था सुचारू होने का इंतजार किया। व्यवस्था नहीं बनती देख दोनों नेता बिना सभा किया वापस लौट रहे हैं।

**फूलपुर में बिना सभा किए लौटे राहुल और अखिलेश**– फूलपुर संसदीय सीट से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार अमरनाथ सिंह मौर्य के समर्थन में पडिला स्थित मैदान में आयोजित जनसभा नहीं हो सकी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव मंच पर जैसे ही पहुंचे भीड़ बेकाबू हो गई। बैरीकेडिंग तोड़ते हुए भीड़ मंच तक पहुंच गई। माइक का तार टूट गया। बिजली का तार टूट गया। कई कार्यकर्ता और मीडिया कर्मी गिरकर चोटिल हो गए।

राहुल गांधी और अखिलेश कार्यकताओं और समर्थकों को समझते रहे लेकिन बेकाबू भीड़ नियंत्रित नहीं हुई। करीब 20 मिनट तक दोनों नेता यहां रहे और फिर बिना भाषण दिए हेलीकॉप्टर में सवार होकर निकल गए।

**राहुल गांधी और अखिलेश पहुंचे मुंगारी**– इसके बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव रविवार दोपहर बाद दो बजे इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से इंडी गठबंधन के प्रत्याशी उज्ज्वल रमण सिंह के समर्थन में सभा करने के लिए करछना विधानसभा क्षेत्र के मुंगारी गांव पहुंचे। दोनों नेता ने रैली को संबोधित किया।

## बिहार में शिक्षकों की और बढ़ेगी संख्या, नीतीश कुमार बोले- 10 लाख युवाओं को शिक्षक बनाएंगे

सिवान। सिवान के बड़कागांव में सीएम नीतीश कुमार ने रैली को संबोधित करते हुए इंडी गहठबंधन पर निशाना साधा। इस दौरान उन्होंने एनडीए से जदयू प्रत्याशी के पक्ष में वोट करने की अपील की। सीएम नीतीश ने कांग्रेस पर जमकर प्रहार करते हुए कहा कि ये लोग कभी जातीय जनगणना नहीं करा सकते हैं। सीएम नीतीश कुमार ने 400 का आंकड़ा पार करने की अपील की। उन्होंने बिहार में हुए जातीय जनगणना को अपने सरकार की बड़ी उपलब्धि बताते हुए लोगों से पूछा कि कांग्रेसिया कभी जातीय जनगणना करा सकता है क्या? उन्होंने सभा में मौजूद लोगों से जदयू प्रत्याशी को वोट करने की अपील की। उन्होंने कहा कि जब मैं महागठबंधन के साथ था तो कांग्रेस जातीय जनगणना के पक्ष में नहीं थी। जब मैं फिर एनडीए गठबंधन के साथ हूं तो कांग्रेस जातीय जनगणना का राग अलाप रहा है। ये लोग कभी जातीय जनगणना नहीं करा सकते हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने देशरत्न की धरती से जंगल राज का सफाया करने की उपलब्धि गिनायी। उन्होंने आधी आबादी को आरक्षण और सात निश्चय

योजनाओं के तहत किए गए कार्यों को लोगों से नहीं भूलने की अपील की। उन्होंने कहा कि बिहार में सुशासन के साथ हर क्षेत्र में विकास हुआ है। लाखों युवक युवतियों को नौकरी मिली है। 2025 से पहले 10 लाख युवाओं को शिक्षक बनाया जाएगा। अन्य क्षेत्रों में रोजगार का सृजन होगा।

## जूता कारोबारियों पर छापा : नोट गिनते-गिनते थकी मशीन कुछ देर के लिए रोकी गिनती, बैडों में भरी नोटों की गड्डियां

आगरा। आगरा में जूता कारोबारियों के ठिकानों पर आयकर विभाग की कार्रवाई जारी है। बीते दिन से शुरू हुई नोटों की गिनती का सिलसिला अभी थमा नहीं है। पूरा रात नोटों की गिनती होती रही। सुबह तक 60 करोड़ रुपये की रकम बरामद हुई है। इसी दौरान नोट गिनने की मशीन गर्म होकर बंद हो गई, जिसके बाद गिनती कुछ समय के लिए रोक दी गई। कार्रवाई में अबतक 60 करोड़ की नकदी मिल चुकी है। यह संख्या 100 करोड़ से ज्यादा निकलने की संभावना है। हरमिलाप ट्रेडर्स, बीके शूज और मंशु फुटवियर पर आयकर विभाग की कार्रवाई चल रही है। बता दें इन्वेस्टिगेशन विंग ने आगरा, लखनऊ, कानपुर के कर्मचारियों के साथ इन कारोबारियों के छह ठिकानों पर कार्रवाई की। इनमें बीके शूज के एमजी रोड स्थित प्रतिष्ठान और सूर्य नगर स्थित घर की तलाशी ली गई। जूते की ट्रेडिंग कर रही मंशु फुटवियर और बीके शूज के मालिक रिश्तेदार हैं और बीते कुछ वर्षों में ही बाजार में बड़ा नाम बन गए हैं। हरमिलाप ट्रेडर्स का शू मैटेरियल का काम है। इन्वेस्टिगेशन विंग की 12 से ज्यादा टीमों ने यह कार्रवाई की। कारोबारियों के पास से भारी मात्रा में जमीन में निवेश, सोने की खरीद की जानकारी भी मिली है। इनर रिंग रोड के पास कारोबारियों ने बड़ा निवेश किया है। टीम ने लैपटॉप, कंप्यूटर और मोबाइल फोन जब्त किए हैं। साथ ही इनका डाटा लिया गया है। रसीदें और बिल के साथ स्टॉक रजिस्टर की जांच की गई है। इस जांच में कई हैरान कर देने वाली जानकारियां सामने आई हैं। एक प्रतिष्ठान के संचालक ने अपने आईफोन का लॉक नहीं खोला है। उसमें लेन-देन के कई राज छिपे हैं।

## बंगलूरू से कोच्चि जा रहे विमान के इंजन में लगी आग, कराई गई इमरजेंसी लैंडिंग

बंगलूरू। बीते कुछ दिनों से एयर इंडिया एक्सप्रेस काफी चचाओं में हैं। पहले बड़े स्तर पर उड़ानों को रद्द करने के लिए सुर्खियां बंटोरी थीं। वहीं अब इसके एक विमान के इंजन में आग लगने की वजह से चर्चा में हैं। दरअसल, एयर इंडिया एक्सप्रेस के एक विमान के इंजन में आग लगने के बाद उसे देर रात बंगलूरू में उतारा गया। बता दें, विमान बंगलूरू से कोच्चि जा रहा था। इंजन में आग लगने के कारण एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान की बंगलूरू हवाईअड्डे पर आपातलीन लैंडिंग कराई गई। केम्पेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (केआईए) पर इमरजेंसी लैंडिंग के तुरंत बाद आग बुझाई गई। सभी यात्री और क्रू मेंबर्स सुरक्षित हैं। एयर इंडिया एक्सप्रेस ने बताया कि सभी 179 यात्रियों और छह चालक दल के सदस्यों को बाहर निकाल लिया गया है। कोई घायल नहीं हुआ। सूत्रों के अनुसार, आग लगने के कुछ मिनट बाद घटना का पता चला था। बयान में कहा गया, 'उड़ान IX1132, रात 11.12 बजे बंगलूरू के केम्पेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरी, हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद जब जहाज पर चालक दल ने दाहिने इंजन में आग देखी गई। इसके तुरंत बाद एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) को इसकी सूचना दी गई।' कहा गया है कि लैंडिंग के तुरंत बाद आग बुझा दी गई। बंगलूरू अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा लिमिटेड (बीआईएएल) के प्रवक्ता ने बताया कि उड़ान भरने के बाद दाहिने इंजन से आग की संदिग्ध लपटों की वजह से बंगलूरू-कोच्चि उड़ान को वापस लाया गया और एहतियातन लैंडिंग की गई। किसी को कोई चोट नहीं आई। विमान से सभी 179 यात्रियों और चालक दल के छह सदस्यों को सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया गया था। एयर इंडिया एक्सप्रेस के एक प्रवक्ता ने कहा कि असुविधा के लिए हमें खेद है और हम अपने मेहमानों को जल्द से जल्द अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं।

## 'जो राम द्रोही हैं, वे आतंकवादी हैं राष्ट्रद्रोही भी हैं...याद है ना सपा ने आपके'... योगी ने विपक्ष पर साधा निशाना

प्रतापगढ़। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सपा और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि जब-जब सपा और कांग्रेस का गठबंधन रहा, तब-तब अनर्थ हुआ है। उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व वाराणसी में संकट मोचन मंदिर में हुए बम विस्फोट का उदाहरण देते हुए कई घटनाओं का जिक्र किया। बताया कि इन घटनाओं के समय उत्तर प्रदेश में सपा और केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी। इनके समय तमाम आतंकी घटनाएं घटती थीं, आज जब भारत में पटाखा भी फूटता है, पाकिस्तान सफाई देने लगता है कि उसका इसमें कोई हाथ नहीं है। वह जानता है कि भारत अब छोड़ने वाला नहीं है। वह रविवार को प्रतापगढ़ के लालगंज के नया पुरवा में लोकसभा प्रत्याशी संगम लाल गुप्ता के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित करने पहुंचे थे।

कांग्रेस के गठ रामपुर खास में आयोजित इस सभा में भारी भीड़ देख योगी भी पूरे जोश में आ गए। उन्होंने हाथ उठाकर कहा कि चार चरणों के चुनाव हो चुके हैं, अब तक पूरे देश के अंदर पहले ही अनुमान लगाया जा चुका है आगे क्या होने जा रहा है। चार जून के परिणाम के बारे में जनता को पहले से पता चल गया है। जीतेंगे तो मोदी ही।

इसके साथ ही उन्होंने भाजपा के पिछले दस वर्ष के कार्यकाल की तमाम उपलब्धियों को गिनाते हुए कहा कि भारत का कायाकल्प हो चुका है। पहले आतंकी घटनाएं घटित

होती थीं, नक्सली घटनाएं आए दिन देश में होती थीं। आज हर क्षेत्र में आतंवाद समाप्त है, नक्लवाद समाप्त हो चुका है। देश की सीमाएं सुरक्षित हैं। सपा के शासन में व्यापारी और बेटियां किस तरह अपने आपको असुरक्षित महसूस करती थीं, याद है ना। आज हमनें सबसे पहले व्यापारी भाइयों और मां-बहनों को सुरक्षित करने का काम किया है। कांग्रेस-सपा के गठबंधन पर व्यंग्य कसते हुए कहा कि ये देशवासियों पर जजिया कर लगाने की सोच रहे हैं। खून-पसीने से कमाई गई संपत्ति में से आधी लेने की साजिश रच रहे हैं। यही नहीं पिछड़ी जाति के आरक्षण को भी यह मुसलमानों को देने की सोच रहे हैं, पिछड़ी जाति के आरक्षण पर बैन लगाने की साजिश रच रहे हैं। ये जाति के नाम पर देश को बांटेंगे, सुरक्षा और विकास के माहौल को बिगाड़ने की कोशिश करेंगे। हर बार की तरह उन्होंने प्रतापगढ़ के आंवला का जिक्र किया और सौ पढ़ा ना एक प्रतापगढ़ वाली कहावत को भी दोहराया। योगी ने अपने भाषण के अंत में अयोद्या में दिव्य राम मंदिर के निर्माण का प्रसंग छेड़ते हुए कहा कि अब आप लोग अयोध्या को नहीं पहचान पाएंगे। राम भक्तों से हाथ उठवाया। कहा, रामभक्त जहां भी रहेंगे, लोक के हित के बारे में सोचेंगे, गरीब के बारे में सोचेंगे। जो राम द्रोही हैं, वे आतंकवादी हैं, राष्ट्रद्रोही भी हैं। याद है ना सपा ने आपके नौजवानों को नौकरी देने से टरकाया था, आप उनको वोट से टरका दीजिएगा।

## राम रहीम ने हाईकोर्ट से लगाई गुहार: कहा- 41 दिन की पैरोल-फरलो बची हुई, 29 फरवरी के आदेशों पर रोक हटाने की मांग

चंडीगढ़। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत सिंह फिर से जेल से बाहर आना चाहते है, इसी उम्मीद से उसने किसी भी तरह की पैरोल या फरलो देने पर रोक के आदेश को हटाने के लिए हाई कोर्ट के समक्ष गुहार लगाई है। डेरा प्रमुख के अनुसार, इस साल उसके पास अभी भी 41 दिन की पैरोल/फरलो बची हुई है और वे इसका लाभ उठाना चाहते हैं। गुरमीत सिंह दुष्कर्म और हत्या के मामलों में दोषी है और वर्तमान में रोहतक जेल में सजा काट रहा है। वह पैरोल या फरलो पर रिहाई के लिए आवेदन करना चाहता है। उसने दावा किया है कि वह इस साल 20 दिन की पैरोल और 21 दिन की फरलो सहित कुल 41 दिनों की अवधि के लिए रिहाई के लिए पात्र है। 29 फरवरी को, हाई कोर्ट की एक खंडपीठ ने राज्य को निर्देश दिया था कि भविष्य में अदालत की अनुमति के बिना डेरा प्रमुख के पैरोल के आवेदन पर विचार न किया जाए। 29 फरवरी के आदेशों पर रोक हटाने की मांग करते हुए डेरा प्रमुख ने अब दलील दी है कि पैरोल और फरलो देने का उद्देश्य सुधारात्मक प्रकृति का है और दोषी को परिवार और समाज के साथ अपने सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में सक्षम बनाना है। डेरा प्रमुख, जो वर्तमान में रोहतक जेल में बंद है, ने यह भी दावा किया है कि डेरा प्रमुख को दी गई पैरोल उन दोषियों के समान है जो इसी तरह की स्थिति में हैं। 29 फरवरी का आदेश डेरा प्रमुख के अधिकारों को नुकसान पहुंचा रहा है क्योंकि वह अधिनियम के अनुसार इस वर्ष 20 दिनों के लिए पैरोल और 21 दिनों के फरलो के लिए पात्र हैं और जैसा कि अन्य समान रूप से रखे गए दोषियों को दिया गया है। डेरा प्रमुख ने यह भी कहा है कि हरियाणा गुड कंडक्ट प्रिजनर्स (टेम्परेरी रिलीज) एक्ट 2022 के तहत पात्र दोषियों को हर कैलेंडर वर्ष में 70 दिन की पैरोल और 21 दिन की फरलो देने का अधिकार दिया गया है।

## संपादकीय

# भैंस भरोसे वैतरणी पार करने की कवायद

राजनीति में बहस का स्थान तो हमेशा रहा। लेकिन भैंस का कभी नहीं रहा। भैंस लोक व्यवहार में आयी जैसे हरियाणा में असहमति और नाराजगी में अक्सर कह दिया जाता है कि यार मैंने क्या तेरी भैंस खोल रखी है। फिर बात बिगड़ने पर भी लोग कह उठते हैं- ले भई, गई भैंस पानी में। जैसे किए कराए पर पानी फिरना अच्छा नहीं माना जाता, वैसे ही भैंस का इस तरह पानी में जाना भी अच्छा नहीं माना जाता। भले ही खुद भैंस को कितना ही अच्छा लगता हो। वह घंटों पानी में रह सकती है और बड़े आनंद से रह सकती है। हालांकि, भैंस पालने वालों को भी उसका पानी में लोटना उतना ही पसंद होता है। और खासतौर से गर्मी के दिनों में अगर भैंस दो-चार घंटे पानी में लोट ले, तो मालिक को भी सुकून मिलता है। लेकिन भैंस कीचड़ में भी उतने ही आनंद से लोट सकती है। इस मायने में वह किसी तरह के आभिजात्य की मारी नहीं होती। खैर, भैंस कहावतों में भी आयी और ऐसी आयी कि उसके आगे बीन बजी तो भी वह पगुराती रही। इस माने में भैंस ज्यादा टेंशन नहीं लेती। अपना बीपी नहीं बढ़ाती। और जनाब कमाल तो यह है कि भैंस फिल्मी गानों में भी आयी और एक जमाने में तो उससे जुड़ा वह फिल्मी गाना- मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा- इतना प्रसिद्ध हुआ कि महबूबाओं को रश्क होने लगा कि कहीं शायरों ने हमें भुला ही तो नहीं दिया। लेकिन भैंस अब राजनीति में भी आ गयी है। इसे लेटरल एंट्री नहीं बल्कि यह माना जाए कि उसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ रहा है। गाय तो खैर राजनीति में पहले से थी। अच्छी बात यह है कि जो गाय को लेकर आए वही, भैंस को भी लेकर आए। सो किसी तरह के भेदभाव का आरोप नहीं लग सकता। अलबत्ता अगर भैंस अब भी राजनीति में नहीं आती तो वह जरूर भेदभाव का आरोप लगा सकती थी। हालांकि, गाय ने कभी यह आरोप नहीं लगाया कि भैंस को लेकर तो कहावतें बनी, पर उसको लेकर नहीं बनी। लेकिन वह जानती है कि उसे मां का दर्जा मिला जो भैंस को सारी दुनिया को दूध पिलाकर भी नहीं मिला। उसको लेकर सौगंधें खायी जो भैंस को लेकर कभी नहीं खायी गयी। इस लिहाज से मामला बराबरी का ही रहा। लेकिन इतनी शिकायत तो गाय को हो ही सकती थी कि मालिकों ने गाय को कभी खूंटे पर नहीं रखा और वह कचरे के ढेरों पर मुंह मारती रही। जबकि भैंस को उन्होंने कभी खूंटे से खोला नहीं और वह माल उड़ाती रही। लेकिन गाय ने सब्र कर लिया होगा कि फिर धर्मपरायणों की रोटी भी तो हमेशा उसे ही मिली और उसकी पूंछ पकड़े बगैर कोई वैतरणी पार नहीं कर पाया। ऐसे में अगर भैंस चुनाव की वैतरणी पार कर दे तो बुरा क्या है? नहीं?

# छिछालेदर हो रही!

गिरा इतना स्तर ।
क्या कुछ कहना बाकी ।।
टाय टाय फिस्स हुई ।
आपकी चालाकी ।।
कार्यशैली पल पल ।
देख रहा है देश ।।
स्वत: धीरे धीरे ।
पहुंच रहा संदेश ।।
थे बदलने आए ।
जो गड़बड़ था तंत्र ।।
उतरे बदसलूकी पर ।
कर विचरण स्वतंत्र ।।
रहा ना कुछ अब गुप्त ।
खुल गए सारे राज ।।
छीछालेदर हो रही ।
फिर भी पहने ताज ।।

–कृष्णेन्द्र राय

# यादगार होगी स्मृति ईरानी की जीत!

**शिव शरण त्रिपाठी**

कभी कांग्रेस की खानदानी सीट मानी जाने वाली अमेठी से 2019 में पहले भाजपा की स्मृति ईरानी से चुनाव हारना और अब 2024 में राहुल गांधी का पलायन करना निःसंदेह यह बताने को काफी है कि राहुल गांधी स्मृति ईरानी से टक्कर लेने का साहस नहीं दिखा सके। अलवक्त्ता कांग्रेस ने राहुल गांधी की बजाय अर्से तक गांधी परिवार के अमेठी, रायबरेली में चुनाव प्रबन्धक एवं वफादार सिपहसालार रहे किशोरी लाल शर्मा को चुनाव मैदान में उतारकर प्रत्यक्षः यह जताने की कोशिश की हैं कि गांधी परिवार अमेठी से अपने पुराने रिश्ते को बरकरार रखना चाहता है।

कांग्रेस के रणनीतिकारों को उम्मीद थी कि चूंकि राहुल गांधी पड़ोस की गांधी परिवार की खानदानी सीट रायबरेली से चुनाव लड़ रहे हैं सो किशोरी लाल शर्मा को इसका लाभ मिलना तय है। यही नहीं चूंकि उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन के तहत रायबरेली व अमेठी सीट कांग्रेस के खाते में गई अतएवं दोनो ही सीटों पर गठबंधन की प्रमुख भागीदार सपा के वोटों का लाभ मिलना तय है। कांग्रेस के रणनीतिकार भले ही अपनी रणनीति से संतुष्ट हो। भले ही गांधी परिवार अपनी साख बचाने की कोई भी दलील दे पर सच्चाई यही है कि राहुल गांधी ने अमेठी सीट से चुनाव लड़ना कतई उचित नहीं समझा। उन्हें परिवार की 2019 में अपनी हारी खानदानी सीट अमेठी से मम्मी श्रीमती सोनिया गांधी की जीती रायबरेली कहीं ज्यादा सुरक्षित लगी। जहां तक अमेठी सीट पर स्मृति ईरानी के मुकाबले में किशोरी लाल शर्मा को मैदान में उतारने की बात है तो उनके उतारने से अमेठी में न तो कोई उत्साह की लहर है न तो उन्हे अमेठी हाथोहाथ लेने को तैयार है। समर्पित कांग्रेसजनों और पदाधिकारियों तथा कार्यकताओं के अलावा न तो कोई बड़ा कांग्रेसी नेता उनके पक्ष में दिखाई दे रहा है और न ही उन्हे गांधी परिवार से कोई विशेष तरजीह दी जा रही है। यदि ऐसा न होता तो श्री शर्मा के नामांकन के मौके पर प्रियंका गांधी अवश्य मौजूद रहती। जबकि वह पड़ोस में यानी रायबरेली में अपने भाई राहुल के नामांकन के अवसर पर जोश-ओ-खरोश के साथ उपस्थित थी। यह मान लिया जाये कि भाई के नाते प्रियंका की प्राथमिकता राहुल गांधी थे तो भी प्रियका के रॉबर्ट वाड्रा तो उपस्थित रह ही सकते थे।

जहां तक इंडिया गठबंधन के प्रमुख दल सपा व अन्य के कांग्रेस प्रत्याशी को समर्थन मिलने का सवाल है, हालात बता रहे हैं कि सपा समर्थक खासकर यादव समाज के लोगों का रूझान कांग्रेस प्रत्याशी की तुलना में भाजपा प्रत्याशी की ओर कहीं ज्यादा है। जिस तरह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, स्मृति ईरानी के जुलूस से लेकर नामांकन पत्र दाखिल करने के मौके पर उपस्थित रहे और उन्होने पड़ोस के सुल्तानपुर में अपनी सुसराल बताकर अपने को यहां का दामाद बताकर अपना हक जताया। उससे भी यादव विरादरी का अधिकाधिक वोट श्रीमती ईरानी को मिलना ही मिलना है। यहां यह भी कम गौरतलब नहीं है कि अमेठी के जिन दो सीटों पर सपा विधायकों का कब्जा है उनमें से एक गौरीगंज के सपा विधायक सपा से लगभग प्रत्यक्ष भी न भी सही अप्रत्यक्ष रूप से नाता तोड़ चुके हैं। उनका पूरा परिवार हाल ही में भाजपा में शामिल हो चुका है। ज्ञात रहे सपा विधायक राकेश प्रताप सिंह गौरीगंज सीट से लगातार तीन बार चुनाव जीतकर एक रिकार्ड बना चुके हैं। उनका इस सीट के मतदाताओं पर काफी अच्छा प्रभाव माना जाता है। ऐसे में उनके समर्थकों का अधिकाधिक वोट कांग्रेस के श्री शर्मा की बजाय भाजपा की श्रीमती ईरानी को मिलना तय माना जा रहा है। सपा की दूसरी विधान सभा सीट अमेठी पर भी ऐसा ही नजारा दिखने को मिल रहा है। यहां से सपा विधायिका महाराजी देवी का बेटा और बेटी सहित पूरा कुनबा ही श्रीमती ईरानी के पक्ष में चुनाव प्रचार करने में जुटा हुआ है। ज्ञातव्य है महाराजी देवी के पति गायत्री प्रजापति भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते एक अर्से से जेल में बंद है और उन्हे लगता है कि भाजपा की शरण में जाने से उनके पति व परिवार को राहत मिल सकती है।

महाराजी देवी प्रजापति ओबीसी से आती हैं और उनकी बिरादरी कुम्हारों के अलावा उनके खास समर्थक मानी जाने वाली जातियों मौर्य, नाई आदि का भी भरपूर समर्थन भाजपा प्रत्याशियों को मिलना तय माना जा रहा है। जानकार सूत्रों का कहना है कि यहां पर यह भी कम काबिलेगौर नहीं है कि जब 2019 में कांग्रेस प्रत्याशी राहुल गांधी को सपा-बसपा गठबंधन का पूरा समर्थन प्राप्त था तब भी भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी को ओबीसी के 70 फीसदी मतदाताओं का समर्थन हासिल हुआ था और कुर्मी तथा कौरी जाति का तो 80 फीसदी से अधिक समर्थन मिला था। भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में एक और महत्वपूर्ण बात यह बतायी जा रही है और वो है बसपा का सपा से अलग होकर स्वतंत्र चुनाव लड़ना। समझा जा रहा है कि ओबीसी जाति के रवि प्रकाश मौर्य भाजपा व कांग्रेस दोनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। हालांकि यह तथ्य भी सामने आ रहा है कि बसपा के चलते मुस्लिम व दलित वोटों में बंटवारा तय है। जिसका खामियाजा कांग्रेस को ही भुगतना पड़ेगा। राम मंदिर बनने के बाद से दलित परिवारों का ज्यादा से ज्यादा समर्थन भाजपा को मिलना सुनिश्चित है। जहां तक मुस्लिम मतों का सवाल है कुछ हद तक मुस्लिम महिलाओं का वोट भी भाजपा प्रत्याशी के खाते में जा सकता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्मृति ईरानी के समर्थन में अब तक दो-दो बार रैलिया करने से उदासीन मतदाताओं में जोश देखने को मिल रहा है। उपरोक्त तमाम तथ्यों, हालातों के अलावा स्मृति ईरानी का अमेठी के लोगों के बीच रहकर उनके सुख दुख में शामिल होना और क्षेत्र के उतरोत्तर विकास के लिये हर संभव प्रयास करना उनकी जीत को और पुख्ता बनाता है। अब तो यहां तक दावे किये जाने लगे हैं कि इस बार भाजपा प्रत्याशी स्मृति कम से कम दो लाख वोटों से कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल शर्मा को पराजित करने में सफल होगी।

# सत्यनिष्ठा से किया गये कार्य में सफलता अवश्य मिलती है

सरकारी सेवकों के पुरोधा और पूरा जीवन सरकारी सेवकों की सुख-सुविधा के लिये संघर्ष शील रहे कर्म रत्न बी.एन.सिंह की पुण्य तिथि 18 मई है जिसे पूरा प्रदेश कर्मचारी मसीहा को ह्रदय से याद करता है। मुगलकाल से प्रचलित दस उंगलियों की छाप से मुगल शासकों द्वारा बनाये गये राजा (राव साहब) के वंशज स्व.चन्द्र पाल सिंह व श्रीमती तिलक राज कुंवरि नयन ग्राम रायबरेली के घर 17 जुलाई 1927 को एक पुत्र ने जन्म लिया, जो पढ़ लिखकर सरकारी सेवा में आकर बी एन सिंह के रुप में जाने गये।स्व.बी.एन.सिंह जी पं रघुबर प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में बनी कार्यकारिणी के महामंत्री के रूप में तथा 1984 से जीवन पर्यंत राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष के रुप में सेवा करते रहे।वर्ष 1989 में मोहम्मद उस्मान आरिफ महामहिम राज्य पाल महोदय ने उन्हें सदस्य विधान परिषद मनोनीत किया।स्व सिंह साहब को 1966 के कर्मचारी आन्दोलन में ह्रदय घात हुआ।एसपीजीआई में भर्ती हुये उन्हें पेसमेकर भी लगा किन्तु ईश्वर ने दिनांक 18 मई 1999 को हम सबसे छीन लिया।

स्व.बी.एन.सिंह जी अपने जीवन में अनेक छोटी बड़ी कठिनाईयों से गुजरे हैं उनके सामने बहुतेरी सरकारी और गैर सरकारी चुनौतियां आती रही है।वर्ष 1966-67 के हड़ताल में निष्कासित कर्मचारियों के सहायतार्थ लखनऊ के महानगर जैसे पॉश इलाके में स्थित उनका प्लाट बिक गया।यह पारिवारिक चुनौतियां केवल और केवल कर्मचारी आन्दोलनों के नाते उनके सामने आती रही।स्व बी.एन.सिंह अपने धुन के पक्के थे दूरदर्शिता के साथ जो ईरादा कर लेते थे उसपर डटे रहते थे यही कारण रहा कि बड़ी से बड़ी एथारिटी वार्ता के टेबल पर उनके सामने जब होती थी तो वह स्व बी.एन. सिंह साहब की बातों को मानने के लिए मजबूर हो जाती थी। संगठनात्मक रुप से विपरीत विचार धारा रखने वाले लोग भी उनके निगोशिएशन की प्रशंसा करते थे।

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद उत्तर प्रदेश के गठन दिनांक 26 फरवरी 1966 ,से ही स्व बी.एन. सिंह अपना महत्वपूर्ण योगदान देना प्रारंभ कर दिये थे। केन्द्र प्रान्त महंगाई भत्ता एक करो,छटनी नोटिस बंद करो की मांग को लेकर दिनांक 7 दिसम्बर 1966 से हुई हड़ताल में स्व बी.एन.सिंह जी ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की थी और उसको अंजाम तक पहुंचाने में उनके साहसिक कदम को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।आज वह संघर्ष और सफलता राज्य कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ता के निमित्त मील का पत्थर बना हुआ है।वर्ष 1986 में राज्य कर्मचारियों को केंद्रीय चतुर्थ वेतन आयोग के आधार पर समानता का वेतनमान दिलवाने हेतु निर्णायक संघर्ष का उन्होंने नेतृत्व किया और इतना ही नहीं पांचवें वेतन आयोग की रिपोर्ट केन्द्र में लागू होने के पश्चात तात्कालिक राज्य सरकार ने हीला-हवाली करना चाहा।लेकिन स्व बी.एन.सिंह साहब का नेतृत्व इतना बलशाली था कि दिनांक 1 जनवरी 1996 से पुनः केंद्रीय समानता का वेतनमान मिला।वर्ष 1994 में दो प्रोन्नति वेतन मान कर्मचारियों को दिलवाने हेतु स्व बी.एन.सिंह साहब ने 51 दिनों तक हड़ताल का नेतृत्व किया और सफलता मिली।जिसका परिणाम रहा कि आज अधिकांश कर्मचारी जिस पद पर काम कर रहा है।उससे ऊपर का वेतनमान ले रहा है।

स्व बी.एन.सिंह साहब अपनी बौद्धिक क्षमता और निगोशिएशन के बल पर लम्बे समय से कार्यरत कर्मचारियों की विनियमितीकरण, स्थायीकरण, अवकाश नकदीकरण, मृतक आश्रितों का सेवायोजन ,केन्द्र के बराबर मकान किराया भत्ता, सामूहिक बीमा,चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को तृतीय श्रेणी में प्रोन्नति, केन्द्र के बराबर बोनस, सेलेक्शन ग्रेड/समयमान वेतनमान और प्रोन्नति वेतन मान, जीपीएफ पासबुक प्रणाली, अवकाश यात्रा सुविधा, मान्यताप्राप्त सेवा संघों के अध्यक्ष/ मंत्री के स्थानांतरण पर रोक, संघों/ परिसंघों के अध्यक्ष/ महामंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्यों को विशेष आकस्मिक अवकाश की सुविधा आदि अनेक सुविधायें दिलवाने में सफलता पाते रहे।

राज्य विधान सभा में माननीय सदस्य के रूप में स्व बी. एन. सिंह वर्ष 1989-1995 के मध्य कर्मचारियों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाते रहे ।सदन में उनके द्वारा उठायी गयी बातों पर सरकार द्वारा प्रभावी ढंग से कार्यवाही की जाती थी।कर्मचारियों के कुशल नेता होने के साथ-साथ कुशल राजनीतिक गुण भी स्व बी. एन.सिंह साहब में मौजूद रहा। " नेतृत्व वह कला है जिसके द्वारा आप किसी अन्य व्यक्ति से वह काम कराते हो,जो आप चाहते हैं कि पूरा हो जाय परंतु उस व्यक्ति को यह अनुभव कराते हैं कि उस व्यक्ति को इस कार्य को करने का अवसर इसलिए प्रदान किया जा रहा है क्योंकि वह उसको करना चाहता है यद्यपि उक्त कथन द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की संयुक्त सेना के सेनापति तथा युद्धोपरांत अमेरिका के राष्ट्रपति श्री आइजन हावर का कथन है लेकिन स्व बी.एन. सिंह जी पर हूबहू लागू होता है। यह कृतज्ञ समाज उस महामानव को नमन करते हुए पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपना कर्तव्य पालन करने का संकल्प लेता है।

**रामाश्रय यादव**

**लेखक- जिलाध्यक्ष राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद जनपद मऊ**

# पौष्टिक खुराक की निर्देशावली का हो पालन

**दिनेश सी. शर्मा**

पिछले सप्ताह हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पौष्टिकता संस्थान -जो कि भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के तत्वावधान तले देश में सबसे पुरानी अनुसंधान प्रयोगशालाओं में एक है, ने भारतीयों के लिए खान-पान दिशा निर्देश जारी किये हैं। यह दस्तावेज हजारों स्वयंभू और तथाकथित विशेषज्ञों द्वारा सोशल मीडिया पर पौष्टिकता, भोजन एवं खुराक को लेकर मचाई जाने वाली चिल्ल-पों के बीच ताजी हवा का झोंका बनकर आया है क्योंकि उक्त लोगों की भोजन और पौष्टिकता पर कही अधिकांश बातें भ्रामक और झूठी होती हैं। आलम यह है कि एक ओर खाद्य पदार्थ उत्पादक कंपनियां और घर तक व्यंजन पहुंचाने वाले एप्प आधारित सेवा प्रदाता उपभोक्ता को यकीन दिलवा रहे हैं कि घर का खाना एक पाप है। वहीं फूड-ब्लॉगर हर ऐरे-गैरे रेहड़ी-ढाबे वाले के चीनी, नमक और वसा से भरे ऊलजलूल व्यंजनों को असली स्वाद और स्वर्गिक बताकर महिमामंडित कर रहे हैं। स्वयंभू पौष्टिकता विशेषज्ञ और मशहूर चेहरे अंजान उपभोक्ता को खान-पान का नया चलन बताकर उलझा रहे हैं । फैक्ट्री में बने खाद्य उत्पादों पर स्वास्थ्यकर व ताजा का ठप्पा लगाकर बेचा जा रहा है जबकि सेहत- ताजगी से दूर-दूर तक वास्ता नहीं है। निस्संदेह, एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम द्वारा विभिन्न उम्र वर्ग और अंचल के लोगों के लिए प्रमाण-आधारित और तथ्यात्मक खुराक निदेर्शावली जारी करना स्वागत योग्य है। लगभग एक सदी से एनआईएन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन) भारत में पौष्टिकता और खाद्य संबंधी अनुसंधान कार्य में लगा है और इस विषय में ज्ञान का भंडार है। पौष्टिकता संबंधी लगभग सभी राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे कि एकीकृत बाल विकास योजना, मिड-डे मील योजना और साल्ट आयोडाइजेशन के अलावा पौष्टिकता की कमी के उत्पन्न रोगों का निदान करने वाली योजनाएं एनआईएन द्वारा दिए वैज्ञानिक शोध आधारित परामर्श पर आधारित है। खुराक संबंधी नवीनतम निदेर्शावली इस समृद्ध विरासत का एक हिस्सा है।

सरसरी तौर पर देखने पर 17 निदेर्शों वाला यह परामर्श पुरानी बातें और साधारण सा लगता है, मसलन, विभिन्न भोज्य पदार्थों से युक्त खुराक स्वास्थ्यकर होती है, फल और सब्जियों का सेवन अधिक मात्रा में करें और वसा का उपयोग न कम, न ज्यादा मात्रा में करें। लेकिन इस निदेर्शावली की असली ताकत है प्रत्येक निर्देश भारत के संदर्भ में प्रमाण आधारित है। इस संहिता में प्रत्येक आयु-वर्ग के स्वास्थ्य को प्रोत्साहन और बीमारियों की पूर्व-रोकथाम पर जोर दिया गया है, इसमें जहां एक ओर विशेष ध्यान शिशुओं, स्तनपान करवाने वाली महिलाओं और बुजुर्गों पर है तो वहीं अन्य अवयवों की भूमिका जैसे कि शारीरिक गतिविधियां, सुरक्षित पेयजल, साफ-सफाई और पर्यावरणीय पहलुओं पर भी है।

इस खुराक परामर्श को भोजन वर्ग और आम भारतीय की खुराक एवं खाद्य अवयवों को आधार बनाकर तैयार किया गया है, जैसे कि, अनाज, दालें, दूध, सब्जियां और फलों का समुचित मात्रा में समावेश कर खुराक तय करना। इस दस्तावेज का एक अहम हिस्सा है खाद्य उत्पादों पर लगे लेबल को सही ढंग से पढ़ना और समझना सिखाना। इसमें प्रचलित भ्रामक दावों की असलियत समझाई गई है, जैसे कि पूर्ण प्राकृतिक, असली फल या रस युक्त, पूर्ण अनाज (मिल्लेट), चीनी-मुक्त, कॉलेस्ट्रॉल रहित, स्वास्थ्य-मित्र, जैविक, कम-वसा युक्त इत्यादि अर्धसत्य शब्दों का प्रयोग करना। अतएव लोगों के मन में बैठायी गई गलत धारणा के आलोक में एनआईएन जैसे प्रमाणिक संस्थान द्वारा लेबल को सही अर्थों में समझाना बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है। इन दिशा-निदेर्शों का बृहद संदर्भ है भारत में इन दिनों बीमारियों द्वारा नया रूप धरने की प्रक्रिया। देश के समक्ष जहां कुपोषण और अल्पपोषण रूपी समस्या है तो दूसरी ओर मोटापा और अति-मोटापा। अनुमान है कि भारत में बीमारियों के कुल बोझ के पीछे 56.5 फीसदी कारक गलत खुराक है। व्याधियों में अधिकतर हिस्सा मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग का है। शारीरिक गतिविधियों में बढ़ोतरी के साथ स्वास्थ्यकर भोजन लेने से हृदय संबंधी अवस्था, रक्तचाप और मधुमेह टाइप-2 जैसी बीमारी को काफी हद तक घटाया जा सकता है। एनआईएन का सर्वेक्षण बताता है कि 1-19 साल आयु-वर्ग में काफी संख्या अब उनकी है जिनमें उम्र से पहले गैर-संक्रमित रोग जैसे कि मधुमेह और उच्च-रक्तचाप देखने को मिल रहे हैं। कुपोषित एवं अल्प-पोषित और सामान्य वृद्धि वाले बच्चों की आधी संख्या में मैटाबॉलिक बायोमार्कर्स का मिलना चिंता का विषय है।

हमारी रोजमर्रा की खुराक मूलतः नाकाफी है। मसलन, भारतीयों की रोजाना की खाद्य ऊर्जा जरूरत (2000 कैलोरी) में सामान्यतः ग्रा भोजन में अनाज (चावल, गेहूं, मोटा अन्न) की मात्रा कायदे से 45 फीसदी तक होनी चाहिए, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि इनका अंश 50-70 प्रतिशत तक है। एनआईएन का कहना है कि जनसंख्या के बड़े भाग में माइक्रोन्यूट्रेंट-सघन पदार्थ (अनाज, दालें, फलियां, मेवा, ताजा सब्जी, फल इत्यादि) का सेवन अनुशंसित स्तर से कम है। सीमित उपलब्धता और दालों एवं मांस की ऊंची कीमतें लोगों को गेहूं-चावल जैसे आम अनाज पर निर्भर रहने को मजबूर करती हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्यप्रद विकल्पों की अपेक्षा अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, बहुत अधिक वसा, नमक और चीनी युक्त खाद्य वस्तुओं का मूल्य अधिक वहन योग्य और सुलभ हो गया है। ऐसे उत्पादों का ताबड़तोड़ विज्ञापन और प्रचार की तरकीबें बच्चों- बड़ों की भोजन संबंधी प्राथमिकताओं को प्रभावित कर रहे हैं। जो कुछ हम खाते हैं वह भोजन संबंधी उस माहौल पर निर्भर होता है जहां हम रहते हैं, आगे जिसका निर्धारण और स्वरूप सरकारी नीतियों पर निर्भर है। यदि अनाज, मांस और दालें गरीब की क्रय शक्ति से बाहर हो जाएं या परम-प्रसंस्कृत एवं अस्वास्थ्यकारी विकल्प अधिक सस्ते और आकर्षक बन जाएं तो ये स्थितियां गलत सरकारी नीतियों का परिणाम हैं। खुराक दिशानिदेर्शों के अनुपालन को आसान बनाने वास्ते हमें अनेकानेक क्षेत्रों में सामंजस्य विकसित करने वाली नीतियां बनानी होंगी। जैसे कि कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य सुरक्षा, विज्ञापन एवं विपणन, उपभोक्ता जागरूकता, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा, औद्योगिक प्रोत्साहन, पैकेजिंग इत्यादि। स्वास्थ्यकारी भोजन करना एक उपभोक्ता की जिम्मेवारी और चुनाव का विषय है लेकिन सरकारी उत्तरदायित्व है कि ऐसा खाद्य माहौल पैदा करें ताकि लोग जो भी चुनें वह सही हो। एनआईएन ने अस्वास्थ्यकारी और अति-प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों को भ्रामक लेबल और आक्रामक विज्ञापन प्रचार के दम पर बेचने पर चिंता जताई है। लेकिन इस चेतावनी का क्या फायदा जब खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय एक जैसे उत्पाद बनाने वाली कंपनियों (कोला या चिप्स निमार्ता इत्यादि) को सब्सिडी मुहैया करके बढ़ावा दे और खाद्य नियंत्रण प्राधिकरण उनके साथ याराना निभाएं। एक अन्य उदाहरण है गेहूं-चावल जैसे आम प्रचलित अन्न की खपत घटाने की जरूरत में दालों, फल, मांस इत्यादि के सेवन को प्रोत्साहित करने की बजाय मोटा अनाज अपनाने का अतिशयी प्रचार करना। मोटे अनाज पर जोर देने का नुकसान भी है कि यह मिल्लेट कुकीज के नाम पर प्रसंस्कृत खाद्य वस्तुएं बेचने का अन्य अवसर बन गया है। हमें अपनी सार्वजनिक नीतियों में आमूल-चूल परिवर्तन करने की जरूरत है ताकि खुराक संबंधी दिशा-निर्देश लोगों के लिए वास्तविक विकल्प बन सकें।

# जब जिला निर्वाचन अधिकारी बूढ़ी अम्मा कुरेशा खातून के घर पहुँच कराया मतदान

## 98 वर्षीय बुजुर्ग महिला मतदाता से वोटर फैसिलिटी सुविधा का किया शुभारम्भ, भदोही में विशाल सिंह की इस सकारात्मक पहल से बढ़ेगा मतदान

भदोही। मतदान सबसे बड़ा महादान है। यह लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी है। देश के हर जिम्मेदार नागरिक का राष्ट्र के प्रति पहला दायित्व है की वह मतदान करें। भदोही जिला निर्वाचन अधिकारी विशाल सिंह ने मतदाता जागरूकता के लिए बेहतरीन काम किया है। उन्होंने इसे उत्सव बना दिया। रविवार को उनकी एक सकारात्मक पहल ने जहाँ लोगों का दिल जीत लिया। जब वे खुद 98 साल की बूढ़ी माँ मतदाता कुरेशा खातून के घर वोट डलवाने पहुँच गए। उनकी इस पहल से जहाँ चुनाव आयोग का मिशन वोटिंग सफल दिखता है। वहीं अपनी इस पहल से उन्होंने लोगों का दिल जीत लिया।

चुनाव आयोग 85 प्लस बुजुर्ग मतदाताओं को यह सुविधा उपलब्ध कराई है। इसमें ऐसे बुजुर्ग जो अधिक उमर की वजह से मतदान केंद्र नहीं पहुँच सकते हैं वह इस वोटर फैसिलिटी सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए पहले मतदान की प्रक्रिया जब शुरू होती है तो एक फॉर्म भरना होता है। जिन बुजुर्ग मातादाताओं ने यह फॉर्म भरा था निर्वाचन आयोग की टीम आज बैलेट से उनका मतदान करा रही है। 20 मई यानी सोमवार तक टीम घर-घर पहुँच कर बुजुर्गों का मतदान कराएगी।

भदोही जिलानिर्वाचन अधिकारी विशाल सिंह रविवार को मतदान टीम के साथ विधानसभा भदोही के बाजार सरदार खां में उस बूढ़ी मतदाता माँ कुरेशा खातून के घर अपने मतदान टीम के साथ पहुँच गए। उन्होंने खुद अपनी मौजूदगी में 98 बूढ़ी मतदाता माँ का मतदान कराया। इतनी उमर में देश के लिए मतदान यह गौरव का विषय है। यह हमारे देश के लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी है। जिला निर्वाचन अधिकारी की इस सकारात्मक पहल का असर बुजुर्ग माँ पर दिख रहा था। वह मतदान के दौरान बेहद खुश दिखीं। उम्मीद है की भदोही में इस बार भीषण गर्मी में भी लोकतंत्र के महापर्व में झुमकर वोट की बारिश होगी।

भदोही में मतदान सुचारू रूप से संम्पन कराने के लिए जिलानिर्वाचन अधिकारी, मुख्यविकास अधिकारी यशवंत सिंह और प्रशासनिक अमला पूरी सिद्दत से लगा है कि भदोही में इस बार क्लीन स्वीप हों। परदेशियों को भी घर आकर वोट करने का बुलाव जा रहा है। मतदाता पर्ची व वोटर गाइडलाइन का वितरण युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। भदोही में छठवें चरण में 25 मई को मतदान होगा।

**भदोही में सीबीसी मतदाताओं को करेगा जागरूक : डॉ. लालजी**– सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के केंद्रीय संचार ब्यूरो क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी लोकसभा क्षेत्र भदोही में 20 से 24 मई तक मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जायेगा। मतदाताओं की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा निर्वाचन सहभागिता (स्वीप ) कार्यक्रम के तहत केंद्रीय संचार ब्यूरो की ओर से समूह चर्चा, संवाद, गोष्ठी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, खेल खुद प्रीतियोगिता, रंगोली, पेंटिंग एवं भाषण, नारा लेखन आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी वाराणसी, डॉ. लालजी ने बताया की प्रमुख चौराहों, पार्को पंचायत भवनों के साथ पर गीत- संगीत के माध्यम से मतदान के लिए मतदाताओं को प्रेरित करेगें।

## सड़क की पटरियों पर दुकानदारों का अतिक्रमण जिम्मेदार अधिकारी मौन

जखनिया गाजीपुर। स्थानीय कस्बे में सड़क की पटरियों पर दुकानदारों द्वारा किया गया अतिक्रमण नासूर बनता जा रहा है। अतिक्रमण हटवाने को लेकर जिम्मेदार अधिकारियों के चुप्पी साधने का खामियाजा बाजार आने वाले बाहन चालकों को भुगतना पड़ रहा है। बाजार में सड़क के दोनों तरफ दुकानदार पटरियों पर अतिक्रमण कर रखे हैं। साथ ही पटरियों के किनारे वाहनों की बेतरतीब कतारें और लोगों के लिए भी मुसीबत पैदा करते रहते हैं। सड़क पर वाहनों के जाम लगने के चलते आमजन तिरालिस डिग्री के प्रकोप मे बिमार पड़ने लगे हैं ।बाजार में जाम होने से लोग चार पहिया वाहनों से बाजार में खरीदारी करने से मुंह मोड़ना शुरू कर दिए हैं। सड़क पर जाम होने से दुकानदारों का व्यवसाय भी प्रभावित होना तय है फिर भी जिम्मेदार अधिकारी अतिक्रमण न तो हटवा रहे हैं ना तो सड़क के किनारे वाले दुकानदार अतिक्रमण हटाने को तैयार है। बल्कि राहगीरों द्वारा मना करने पर मारपीट की स्थिति बन जाती है।

गौरतलब हो की शासन के आदेश पर अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाकर गत बर्ष निवर्तमान उप जिलाधिकारी द्वारा दुकानों के सामने बारजे, करकट, आदि हटवाए गए, तथा आदेशित कर बताया गया कि सड़क की पटरी पर अतिक्रमण करने वालो के खिलाफ कार्यवाही की जायगी, परन्तु वर्तमान में व्यवस्था जस की तस बनी हुई है।

## दिलदारनगर पुलिस ने किया चाकू द्वारा हत्या के प्रयास का अभियुक्त चाकू सहित गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के कुशल मार्गदर्शन व क्षेत्राधिकारी जमानियां के निकट पर्यवेक्षण में रविवार को वरिष्ठ उप निरीक्षक मनोज कुमार तिवारी मय हमराह रेलवे स्टेश दिलदारनगर के पास से अभियुक्त मुख्तार अहमद सुलेमानी पुत्र शकील अहमद सुलेमानी निवासी मुस्तफाबाद थाना कोतवाली जनपद गाजीपुर को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त मुख्तार अहमद सुलेमानी उपरोक्त के निशान देही पर प्रधान ढाबा के पास से आला कत्ल 01 अदद चाकू बरामद कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

## मतदाता जागरूकता बैडमिंटन में रहा रिशु सिंह, अजय शत्रुधन तथा श्रेयस का खिताब पर कब्जा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत रविवार को प्रातः बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन नेहरू स्टेडियम के इंडोर हाल में बैडमिंटन संघ गाजीपुर के तत्वधान में संपन्न हुआ ।इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संतोष कुमार वैश्य मुख्य विकास अधिकारी, विशिष्ट अतिथि अरविन्द कुमार यादव क्रीड़ा अधिकारी थे सभी खिलाड़ियों से परिचय करते हुए मुख्य अतिथि ने सभी नए वोटर को अपने वोट और मतदान के महत्व के बारे में विस्तार से बताई और सभी को शत प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित किया ।सभी खिलाड़ियों को बताया की गाजीपुर में 1 जून लोकतंत्र का महापर्व है आप सभी लोग अपना वोट पहले देकर तब दूसरा काम करेंगे एवं घर के सभी सदस्यों को भी मतदान स्थल तक ले जाएंगे। आज के ओपन बैडमिंटन प्रतियोगिता के सिंगल खेल में खिलाड़ी रिशु सिंह ने शत्रुघ्न कुशवाहा को 21/15, 23/21 से हराकर ट्राफी अपने नाम किया, डबल में अजय और शत्रुघ्न ने राकेश और रिशु को 21/14, 21/19 से हराकर विजेता बने जूनियर वर्ग में श्रेयश सिंह ने नितिन मौर्या को 21/14, 21/15 से हराकर सिंगल का खिताब जीता। संघ के सचिव संतोष कुमार वर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता का आयोजन मतदान के लिए सभी को जागरूक करने के उद्देश्य से किया गया जिससे गाजीपुर में इस बार रिकार्ड मतदान हो सभी खिलाड़ियों ने पूरे मनोयोग से आज के कार्यक्रम में सहभागिता किया। इस आयोजन को सफल बनाने में अध्यक्ष प्रहलाद राय, योगेंद्र कुमार, डा विजेन्द्र सिंह, गौरव कुमार, संतोष पटेल, राजेश अग्रहरी, पंकज प्रजापति की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

## चार दिवसीय समर कैंप का उद्घाटन

बिल्थरारोड (बलिया)। उभांव थाने के प्रभारी निरीक्षक विपिन सिंह ने कहा कि स्कूलों में वार्षिक अवकाश के बाद अवकाश के दिनों में बच्चों के मनोरंजन का समय आ जाता है। स्कूल की छुट्टी के दिनों में वे खुशियां मनाते हुए स्वतंत्र रुप से मनोरंजन का लाभ उठाते हैं। जिससे बच्चे मानसिक व शारीरिक रूप से पूरी तरह संतुष्ट होकर नए सत्र के पठन-पाठन की तैयारी, मनोयोग से करने लगते हैं। स्कूलों में सत्रावसान के बाद उभांव थाने के प्रभारी निरीक्षक विपिन सिंह ने स्थानीय नगर के न्यू सेंट्रल पब्लिक एकेडमी की ओर से आयोजित स्कूल परिसर में शनिवार से चार दिवसीय समर कैंप का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे। उन्होंने स्कूल के सफल बच्चों को धन्यवाद एवं बधाई देते हुए उन्हें अगले सत्र के पठन पाठन के लिए पूरे जोश खरोश के साथ शुरू करने की शुभकामनाएं भी दी।

## ज्ञानकुंज एकेडमी के छात्र-छात्राओं ने लगाया शीतल जल का प्याऊ

सिकन्दरपुर (बलिया)। भीषण गर्मी के मौसम के मद्देनजर ज्ञानकुंज एकेडमी बंशीबाजार द्वारा भारत स्काउट गाइड के छात्र छात्राओं द्वारा मुख्य सिकन्दरपुर बस स्टैंड स्थित पुलिस बूथ के समीप निःशुल्क जल प्याऊ कार्यक्रम के तहत शनिवार को शीतल जल का प्याऊ लगाया गया। प्याऊ का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक डॉ देवेन्द्र नाथ सिंह व प्रधानाचार्या सुधा पाण्डेय ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान ट्रैफिक पुलिस ने भी बच्चों का सहयोग किया। वही अपनी प्यास बुझाने के उपरांत लोगों ने कहा कि ज्ञानकुंज स्काउट्स गाइड्स द्वारा प्याऊ केंद्र संचालित करने का जो कार्य किया गया वह काफी प्रशंसनीय है। बताते चलें कि स्काउट गाइड के बच्चों द्वारा मुख्य बस स्टैंड पर आने जाने वाले राहगीरों को गुड़ खिलाकर पानी पिलाया गया। वही रोडवेज बस, जीप व ऑटो में बैठे सवारियों को भी ज्ञानकुंज स्काउट्स गाइड्स के छात्रों ने वाहनों में जा जाकर मीठा व पानी पिलाया।

## इंद्रेश कुमार ने मतदान के लिए ग्रामीणों को दिलाई शपथ, समझाया महत्व

पिंडरा। लोकसभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान करने के प्रति रविवार को आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने भानपुर में राष्ट्रहित व समाज के उत्थान के लिए वोट देने के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया। भानपुर में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मुख्य संरक्षक इंद्रेश कुमार ने कहाकि एक सशक्त राष्ट्र व्यक्ति के भागीदारी से बनता है। व्यक्ति के भागीदारी का माध्यम वोट है। वोट से ही एक आत्मनिर्भर व सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है। भाजपा नेता रविशंकर सिंह ने ग्रामीणों का आह्वान किया कि राष्ट्र हित के लिए मतदान सर्वोपरि है। इसलिये मतदान जरूर करें। संगोष्ठी को ब्लॉक प्रमुख धर्मेंद्र विश्वकर्मा, मण्डल अध्यक्ष मनीष पाठक, धर्मेन्द्र सिंह देव, राजू सिंह, राजेन्द्र पटेल, विनोद पांडेय, अनुपम सिंह, रामजग पटेल समेत अनेक लोगों ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी के अंत मे मतदान के लिए शपथ दिलाई गई। जिसमें सैकड़ो की संख्या में महिला व पुरुष शामिल रहे।

## संक्षिप्त खबरें

### नौकरी दिलाने के नाम पर तीन लाख छाछठ हजार की ठगी, मुकदमा दर्ज

प्रखर गोरखपुर। थाना बेलघाट निवासी विरेन्द्र कुमार राव पुत्र राम शबद निवासी ग्राम महुलिया ने हरपुर-बुदहट थाना क्षेत्र के ग्राम रानियापुर निवासी रोबिन कुमार पुत्र दिग्विजय के खिलाफ नौकरी दिलाने के नाम पर तीन लाख छाछठ हजार रुपए की ठगी करने का मुकदमा दर्ज कराया है। थाना बेलघाट निवासी विरेन्द्र कुमार राव ने बताया कि हमारी रिस्तेदारी हरपुर-बुदहट थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत अनन्तपुर निवासी शिवानंद के यहां है, शिवानंद के यहां आने जाने से हमारा सम्पर्क रोबिन कुमार पुत्र दिग्विजय ग्राम रनियापुर थाना हरपुर-बुदहट से हो गई, इन्होंने मुझे रेलवे ग्रुप डी में नौकरी दिलाने का झांसा दिया, नौकरी के लालच में आकर हमने इनको दो लाख सात हजार रुपए फोन पे और एक लाख दस हजार रुपए नगद दे दिया। जब हमें नौकरी नहीं मिली तो जब हम अपना दिया गया पैसा वापस मांगने लगा तो रोबिन कुमार भद्दी भद्दी गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। इस संबंध में थानाध्यक्ष विशाल कुमार उपाध्याय ने बताया कि रोबिन कुमार के खिलाफ धारा 420,406,506 आईपीसी मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

### आर एस हास्पिटल में निःशुल्क जांच और दवा का हुआ वितरण

जखनियां गाजीपुर। क्षेत्र के देवां स्थित मां इसरावती एजुकेशनल एंड वेलफेयर ट्रस्ट प्रयाग राज द्वारा संचालित आर एस हॉस्पिटल में निःशुल्क स्वास्थ्य हेल्थ चेक अप करने के लिए शिविर के माध्यम से इनाया फाउंडेशन प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान में रबिवार को क्षेत्र के काफी संख्या में लोगों का जांच के उपरांत निःशुल्क दवा का बियरण भी किया गया। शिविर में चुनौती पूर्ण बच्चों जैसे सेरेब्रल पाल्सी एड़ी उठाकर चलना, बैठने व खड़े होने या चलने में दिक्कत इत्यादि बच्चों का निःशुल्क कैंप डॉक्टर मोहम्मद कदिर बाल हड्डी व वरिष्ठ सेरेब्रल पाल्सी विशेषज्ञ के द्वारा 28 बच्चों का निःशुल्क जाच कर इन्हे मुफ्त मे दवा वितरण किया गया। तथा गठिया रोग का मशीन के द्वारा 64 मरीजों की जांच की गई, एवं डायबिटीज न्यूरोपैथी के 18 मरीज का मशीन द्वारा जांच किया गया। इनाया फाउंडेशन प्रयागराज के द्वारा एक व्हीलचेयर आर एस हॉस्पिटल को प्रदान किया गया। इस अवसर पर उनके साथ आए सहयोगी मोहम्मद हसन (फिजियोथैरेपिस्ट)कमलेश (ऑर्थोटिक इंजीनियर) वैभव शुक्ला (काउंसलर) एवं आर एस हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉक्टर राजेश कुमार पांडे, डॉक्टर आनंद कुमार पटेल, डॉक्टर संदीप दुबे,डॉक्टर साधना तिवारी, डॉक्टर जेपी कुशवाहा, डॉक्टर पी डी राम, प्रेमशिला, अर्चना, दरक्षा, नेहा, प्रीति, बृजेश, अनुराग रहे। इस अवसर पर संस्थापक राम अवध पांडे ने बताया यह शिविर गरीबों असहायों, साधन बिहिन लोगो को स्वास्थ्य लाभ दिलाने के लिये प्रायः किया जाता है।

### अज्ञात कारणों से गैरेज में लगी आग, तीन बाइक जली

प्रखर चंदवक जौनपुर। खुज्झी बाजार में केराकत मार्ग पर स्थित न्यू बॉम्बे मोटर गैरेज में देर रात्रि अज्ञात कारणों से आग लग गई जिससे उसमें रखी तीन बाइक जल गई। जानकारी होने पर दुकानदार ने ग्रामीणों की मदद से आग बुझाई ।घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई है। खुज्झी निवासी आकाश कुमार की केराकत मार्ग पर न्यू बॉम्बे मोटर गैरेज नाम से दुकान है। वह देर शाम दुकान बंद कर घर चला गया। दो घंटे बाद रात में अज्ञात कारणों से दुकान में आग लग गई। आसपास के लोगों ने दुकान से लपटे निकलते देख दुकानदार को सूचना दी। वह पहुंच कर ग्रामीणों की मदद से आग बुझाई तब तक उसमें रखी तीन बाइक सहित अन्य सामान जल गए थे। भुक्तभोगी ने घटना की सूचना पुलिस व राजस्व विभाग को दे दी।

### संदिग्ध परिस्थितियों में मिली बगीचे में पति पत्नी की लाश पूरे क्षेत्र में सनसनी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। रविवार को थानाध्यक्ष करीमुद्दीनपुर द्वारा बताया गया कि थानान्तर्गत ग्राम भरौली कला के पास बागीचे में एक पुरुष मेल्हू मुसहर पुत्र सीताराम उम्र करीब 60 वर्ष व उसकी पत्नी सुलेखिया देवी उम्र करीब 51 वर्ष निवासीगण ग्राम करकतपुर थानां करीमुद्दीनपुर जनपद गाजीपुर जो मृत अवस्था मे मिले। मौत का कारण संदिग्ध है। जानकारी मिलते ही पुलिस विभाग के उच्चाधिकारियों ने मौका मुआयना किया। फोरेंसिक टीम के द्वारा भी मौके पर कार्यवाही की जा रही है।उपरोक्त मृतको के सम्बंध में प्राप्त प्रार्थना पत्र के आधार पर विधिक कार्यवाही की जा रही है। मौके पर शान्ति व्यवस्था सम्बन्धी कोई समस्या नही है।

# तीनों प्रेक्षकों, डीईओ व पुलिस अधीक्षक ने प्रत्याशियों/अभिकर्ताओं संग की बैठक

## प्रेक्षकगणों, रिटर्निंग आफिसर, पुलिस अधीक्षक के साथ लोकसभा सामान्य निर्वाचन के संबंध में निर्दलीय/राजनीतिक दलों के अभिकर्ताओं/प्रत्याशियों की बैठक हुई सम्पन्न

बलिया। लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 को स्वतन्त्र, निष्पक्ष, पारदर्शी, शान्तिपूर्ण व सकुशल ढंग से सम्पन्न कराने के दृष्टिगत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा बलिया संसदीय निर्वाचन क्षेत्र हेतु नियुक्त सामान्य प्रेक्षक हरबंस सिंह ब्रैस्कोन, पुलिस प्रेक्षक हिंगलाजदान, व्यय प्रेक्षक वेंकटेश एस, रिटर्निंग ऑफिसर रवींद्र कुमार व पुलिस अधीक्षक देव रंजन वर्मा की उपस्थिति में निर्दलीय/राजनीतिक दलों के अभिकताओं/प्रत्याशियों के साथ निर्वाचन के विभिन्न गतिविधियों के संबंध में बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। प्रेक्षकगणों ने उपस्थित अभिकताओं/ प्रत्याशियों से परिचय प्राप्त करते हुए उनके सुझाव सलाह को गम्भीरता से सुनते हुए उनके शिकायतों का निस्तारण करने हेतु आश्वस्त किया। बताया गया कि प्रेक्षकगणों का मोबाइल नम्बर व मिलने का समय मीडिया में प्रकाशित करा दिया गया है।

सामान्य प्रेक्षक हरबंस सिंह ब्रैस्कोन ने अभिकताओं/ प्रत्याशियों भरोसा दिलाया कि संसदीय निर्वाचन चुनाव भारत निर्वाचन आयोग के नीति निदेशों एवं आदर्श आचार संहिता के अनुरूप शान्तिपूर्ण निर्वाचन सम्पन्न होगा। यह बिना आपके सहयोग व सुझाव के करा पाना सम्भव नही है। उन्होंने कहा कि मतदान व मतगणना की प्रक्रिया भारत निर्वाचन आयोग गाइडलाइन के अनुरूप सम्पादित की जायेगी। आप द्वारा जो भी पोलिंग एजेंट बूथ और टेबल पर लगाया जाना है, उसके नियुक्त करने की प्रक्रिया अभी प्रारम्भ कर दे।

व्यय प्रेक्षक ने निर्वाचन में प्रत्याशियों के व्यय/खर्चे पर सबका ध्यान आकर्षित कराते हुए बताया कि सभी प्रत्याशियों ने निर्वाचन के दृष्टिगत बैंक में खोले गये नये खाते के द्वारा ही आय व्यय का विवरण रखें। आपको दिये गये रजिस्टर में अपने समस्त खर्चो का ईमानदारी पूर्वक अंकन करें, जिससे प्रशासन द्वारा स्वयं से बनाये गये शैडो रजिस्टर जिसमें एफएसटी, एसएसटी एवं वीडियों निगरानी टीम व अन्य टीमों द्वारा आपके किये जा रहे खर्चो पर निगरानी रखते हुए व्यय अंकित किया जाता हैं। व्यय रजिस्टर के जॉच हेतु प्रत्याशी/अधिकृत एजेंट को निर्धारित तिथियों 21, 25, 29 मई को कोषागार कार्यालय में उपस्थित होकर जॉच कराना सुनिश्चित करें। बाद में गलती से बेहतर है कि व्यय सम्बन्धित किसी भी बिन्दु पर कोई डाउट हो तो मुख्य कोषाधिकारी से सम्पर्क कर पूछ ले। कहा कि जिन प्रत्याशियों पर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं वे उनका समाचार पत्रों व चैनलों के माध्यम से तीन बार प्रकाशन कराना सुनिश्चित करें।

पुलिस प्रेक्षक ने सभी अभिकताओं/प्रत्याशियों को आश्वस्त किया कि कानून व्यवस्था,स्वस्थ एवं सुरक्षित माहौल में निर्वाचन सम्पन्न होगा, इसके लिए बलिया पुलिस पूरे डिप्लायमेंट प्लान के साथ काम कर रही है। जनपद के सभी विधानसभाओं के लिए भी किये गये पुलिस बलों की प्लानिंग का उन्होंने अवलोकन कर सम्बन्धितों को निर्देशित किया है। उन्होंने बताया कि क्रिटिकल बूथों के लिए अलग से विशेष प्लान तैयार किया गया है। पिछले लोकसभा के निर्वाचन का भी विशलेषणात्मक अध्ययन किया गया है,जिसके दृष्टिगत सम्बन्धित व्यक्तियों पर पाबंद की कार्यवाही करते हुए उस क्षेत्र में अत्यधिक पुलिस बल की तैनाती की जायेगी। जिला निर्वाचन अधिकारी रवींद्र कुमार ने निर्वाचन में किये गये तैयारियों से उपस्थित सदन को अवगत कराया। बताया कि साथ ही उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शानुसार 85 प्लस सीनियर सीटिजन व 40 प्रतिशत से अधिक ग्रसित दिव्यांगजन को घर से ही मतदान करने की सुविधा के दृष्टिगत सातों विधानसभा में फार्म डी का वितरण किया गया है। बीएलओ द्वारा मतदाता पर्ची बांटने का काम 22 मई से शुरू होगा।मतदान कार्मिकों का प्रथम प्रशिक्षण पूरा हो चुका है, द्वितीय प्रशिक्षण 20 से 26 मई के बीच टीडी कालेज में संपन्न होगा। ईवीएम और वीवीपीएटी मशीनों का प्रथम रेंडमाइजेशन हो चुका है। आज द्वितीय रेंडमाइजेशन के बाद बूथवार ईवीएम आवंटित हो जाएगी और 21 मई से कमिशनिंग भी शुरू हो जाएगी। चुनाव में लगे मत कार्मिकों को वोट देने के लिए टीडी कॉलेज में फैसिलिटेशन केंद्र बनाया जाएगा। 50% बूथों की वेबकास्टिंग होगी और संवेदनशील बूथों की वीडियोग्राफी करवाई जाएगी।

बलिया और फेफना के पोलिंग पार्टी की रवानगी कलेक्ट्रेट और विधानसभा बैरिया की रवानगी मंडी से होगा, लेकिन सभी विधानसभाओं का रिसीविंग स्थल मंडी ही होगा। एक अकाउंटिंग हाल में 14 टेबल लगाए जाएंगे। उन्होंने काउंटिंग की व्यवस्था के दौरान होने वाले विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में सभी को अवगत कराया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि आपके जनपद में पूर्ण रूप से कानून व्यवस्था के आवरण में निर्वाचन को निष्पक्ष, पारदर्शी, शान्तिपूर्वक रूप से सम्पन्न कराया जायेगा। जिसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है। जिसका तेजी के साथ क्रियान्वयन सुनिश्चित कराया जा रहा है। उपस्थित राजनीतिक पदाधिकारियों/प्रत्याशियों द्वारा बताये गये समस्याओं, सुझावों, सलाहों को सदन द्वारा गम्भीरता से सुनकर उनके निस्तारण हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने हेतु उन्हें आश्वस्त किया गया।इस बैठक में एडीएम डीपी सिंह, एएसपी डीपी तिवारी और अनिल झा, सिटी मजिस्ट्रेट इंद्रकांत द्विवेदी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

## संक्षिप्त खबरें

### जम्मू में पूर्व पुलिस अफसर गिरफ्तार

**जम्मू।** एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी को हाल में प्रकाशित अपनी पुस्तक में 'संवेदनशील जानकारी' देने के आरोप में सरकारी गोपनीयता अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सेवानिवृत्त पुलिस अधीक्षक मोहम्मद असलम शेख को शुक्रवार देर रात जम्मू शहर के गांधी नगर इलाके में उनके आवास से गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि शेख 1986 में सहायक उप-निरीक्षक के पद पर नियुक्त हुए थे और पिछले साल सेवानिवृत्त हुए थे। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रतियां और अन्य संवेदनशील जानकारी थीं और ये सरकारी गोपनीयता अधिनियम का उल्लंघन है।

### अफगानिस्तान में गोलीबारी स्पेन के तीन लोगों की मौत

**काबुल।** अफगानिस्तान के बामियान प्रांत में हुई भीषण गोलीबारी में स्पेन के तीन नागरिकों समेत चार लोग मारे गए जिनमें से दो महिलाएं हैं। प्रांतीय पुलिस प्रवक्ता मुहम्मद खवानी रासा ने बताया कि कुछ लोगों ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। गोलीबारी में तीन विदेशी नागरिकों और एक अफगानी नागरिक की मौत हो गई। तीन अन्य घायल हो गए। हमले में स्पेन, नॉर्वे, ऑस्ट्रेलिया और लिथुआनिया के चार नागरिक और अफगानिस्तान के तीन लोग घायल हो गए।

### जेनिन पर हमले के दौरान आतंकवादी ढेर

**यरूशलम।** वेस्ट बैंक शहर जेनिन में इस्राइल रक्षा बल (आईडीएफ) और इस्राइल सुरक्षा एजेंसी (आईएसए) के हवाई हमले में एक आतंकवादी मारा गया है। फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि जेनिन में इस्राइली हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गए। आईडीएफ ने शनिवार को टेलीग्राम पर कहा कि परिसर के अंदर कई आतंकवादी थे।

### हरियाणा : स्कूलों में एक जून से गर्मी की छुट्टियां

**चंडीगढ़।** हरियाणा स्कूल शिक्षा निदेशालय ने शनिवार को राज्य के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में एक जून से 30 जून तक ग्रीष्मकालीन अवकाश की घोषणा की। इस अवधि के दौरान सभी स्कूल बंद रहेंगे और एक जुलाई को फिर से खुलेंगे। शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों, खंड शिक्षा अधिकारियों और खंड प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों को इन निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

### आगरा : छापे में 40 करोड़ की नकदी बरामद

**आगरा/नई दिल्ली।** आयकर विभाग ने शनिवार को आगरा में कुछ जूता निर्माण इकाइयों के खिलाफ छापेमारी के दौरान लगभग 40 करोड़ रुपए की नकदी बरामद की। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि नोटों की गिनती अभी चल ही रही है तथा आंकड़ा बढ़ सकता है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश के आगरा में एक जूता कारोबारी और उसकी संबद्ध इकाइयों पर आज दोपहर छापा मारा गया और अब तक 40 करोड़ रुपए की नकदी बरामद की गयी है।

# यूपी में पहले देशी कट्टे बनते थे अब बनते हैं तोप के गोले : शाह

**कहा, ये मोदी की सरकार है, हम एटम बम से नहीं डरते**

**पीओके भारत का है, रहेगा और हम उसे लेकर रहेंगे**

**ललितपुर/ बांदा (भाषा)।** केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि एक जमाना था कि उत्तर प्रदेश में देशी कट्टे बनते थे लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने बुंदेलखंड में डिफेंस कॉरिडोर बनाया और अब यहां तोप के गोले बनते है। शाह झांसी लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी अनुराग शर्मा के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। शाह ने कहा, 'मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बने और उत्तर प्रदेश के विकास की शुरुआत हुई। एक जमाना था जब उत्तर प्रदेश में देशी कट्टे बनते थे लेकिन मोदी ने बुंदेलखंड में डिफेंस कॉरिडोर बनाया और अब यहां तोप के गोले बनते है।' उन्होंने कहा,' पाकिस्तान ने अगर कोई भी गलती की तो ये बुंदेलखंडी गोला पाकिस्तान पर गिरेगा और उसका सफाया कर देगा। 'शाह ने कहा, 'कांग्रेस के नेता मणिशंकर अय्यर ने कहा है कि पाकिस्तान को सम्मान दो, उसके पास एटम बम है, उनसे पीओके (पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर) मत मांगों। मै इनसे कहना चाहता हूं कि ये नरेन्द्र मोदी की सरकार है, हम एटम बम से नहीं डरते ,पीओके भारत का है, रहेगा और हम उसे लेकर रहेंगे। 'दरअसल हाल में एक वीडियो सार्वजनिक हुआ था जिसमें अय्यर यह कहते नजर आ रहे थे कि भारत को पाकिस्तान का सम्मान करना चाहिए क्योंकि वह एक संप्रभु राष्ट्र है और उसके साथ जुड़ना चाहिए क्योंकि उसके पास भी परमाणु बम है। अय्यर ने वीडियो में कहा था कि अगर कोई 'पागल व्यक्ति' वहां सत्ता में आता है और परमाणु बम का इस्तेमाल करता है तो यह अच्छा नहीं होगा और इसका असर यहां भी होगा ।

शाह ने दावा किया, 'चुनाव के चार चरण समाप्त हो चुके है। चार चरण में मोदी 270 सीट लेकर तीसरी सेंचुरी की ओर आगे बढ़ गए है और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के 'इंडी' गठबंधन का सूपड़ा साफ हो गया है। अब ये निश्चित हो गया है कि मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनने जा रहे है। 'बाद में बांदा में भाजपा प्रत्याशी आर के सिंह पटेल के पक्ष मे एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि ये चुनाव सांसद बनाने का नहीं है, ये चुनाव रामभक्तों पर गोली चलाने वालों और श्रीराम मंदिर बनाने वालों के बीच का चुनाव है। उन्होंने कहा, 'अखिलेश, डिंपल, राहुल, सोनिया जी... सबको राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण भेजा गया था, लेकिन ये लोग नहीं गए, क्योंकि ये अपने वोट बैंक से डरते है। इन लोगों ने वोट बैंक की राजनीति करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। 'विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' पर हमला करते हुए गृह मंत्री ने कहा, 'जब पत्रकारों ने 'इंडी' गठबंधन वालों से पूछा कि आपका प्रधानमंत्री प्रत्याशी कौन है? तो उन्होंने कहा, हम बारी बारी से बन जाएंगे।

# धमकी देने को लेकर टीएमसी नेता हुमायूं कबीर को फटकार

**कबीर ने मतदाताओं व प्रतिद्वंद्वी दलों के कार्यकर्ताओं को दी थी धमकी**

**नई दिल्ली (भाषा)।** निर्वाचन आयोग (ईसी) ने धार्मिक आधार पर बयानों के माध्यम से मतदाताओं एवं प्रतिद्वंद्वी पार्टी कार्यकर्ताओं को कथित रूप से डराने-धमकाने को लेकर शनिवार को टीएमसी नेता हुमायूं कबीर को फटकार लगायी। कबीर ने इस मामले में आयोग से मिले 'कारण बताओ' नोटिस का जवाब देते हुए अपना बचाव किया था और कहा था कि उनकी टिप्पणी को जानबूझकर 'संदर्भ' से इस तरह अलग किया गया कि मानो यह खतरा हो एवं आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन हो।

पश्चिम बंगाल में मुर्शिदाबाद जिले के काजीपारा में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए तृणमूल नेता कबीर ने मतदाताओं एवं प्रतिद्वंद्वी दलों के कार्यकर्ताओं को धमकी दी थी। निर्वाचन आयोग का मानना है कि उनका बयान धार्मिक विभाजन पैदा करने की चेष्टा था। आयोग द्वारा दिये गये भाषण के अंश में कहा गया है, 'यदि आप सोचते हैं कि 30 प्रतिशत लोग मुर्शिदाबाद में रहते है और आप 70 प्रतिशत हिस्सा है .....यदि आप सोचते है कि चूंकि आप कामनगर में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा है इसलिए, आपको काजीपारा में मस्जिद ढहाने का हक है एवं इलाके के बाकी हिस्सों के मुस्लिम भाई चुपचाप बैठे रहेंगे तो आप गलतफहमी में है। मै भाजपा को चेतावनी दे रहा हूं कि ऐसा कभी नहीं होगा।' निर्वाचन आयोग ने विधायक को चुनाव आदर्श आचार संहिता की याद दिलायी जो कहती है कि कोई भी पार्टी या कोई भी उम्मीदवार ऐसी गतिविधि में शामिल नहीं होगा जिससे मौजूदा मतभेद गहरा हो जाए अथवा विभिन्न जातियों एवं समुदायों या धार्मिक या भाषाई समूहों के बीच नफरत फैले या तनाव पैदा हो।

# उत्तर-पश्चिम भारत में लगातार दूसरे दिन भी भीषण गर्मी

**कई राज्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार**

**मध्य प्रदेश और गुजरात के कुछ हिस्सों में लू चली**

**नई दिल्ली (भाषा)।** उत्तर पश्चिम भारत के कई हिस्सों में शनिवार को लगातार दूसरे दिन भीषण गर्मी पड़ी और विभिन्न स्थानों पर तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा। मध्य प्रदेश और गुजरात के कुछ हिस्सों में भी लू चली।

आईएमडी के अनुसार, उत्तर पश्चिम भारत में भीषण गर्मी अगले पांच दिनों तक जारी रहेगी, जिसका सबसे अधिक प्रभाव दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश पर पड़ने का अनुमान है। मौसम कार्यालय ने दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और पश्चिम राजस्थान के लिए 'रेड' अलर्ट जारी किया है, जिसमें स्वास्थ्य के लिहाज से 'संवेदनशील लोगों के लिए अत्यधिक देखभाल' की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

आईएमडी ने पूर्वी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार के लिए 'ऑरेंज अलर्ट' जारी कर शिशुओं, बुजुर्गों व पुरानी बीमारियों से ग्रस्त लोगों समेत संवेदनशील लोगों की 'उच्च स्वास्थ्य देखभाल' पर जोर दिया। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात और मध्य प्रदेश में 20 स्थानों पर अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक दर्ज किया गया। दिल्ली में मुंगेशपुर में अधिकतम तापमान 46.8 डिग्री सेल्सियस, नजफगढ़ में 46.7 डिग्री सेल्सियस, पीतमपुरा में 46.1 डिग्री सेल्सियस और पूसा में 46 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

राजस्थान में चार स्थानों पर तापमान 46 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला गया। जैसलमेर में 46.2) बाड़मेर में 46.9, गंगानगर में 46.3 और पिलानी में 46.3 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। अगले कुछ दिन में गोवा और पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र में उच्च आर्द्रता लोगों की परेशानी बढा सकती है। रात का उच्च तापमान खतरनाक माना जाता है, क्योंकि इससे शरीर को ठंडा होने का मौका नहीं मिलता।

भारत में आम चुनावों के मद्देनजर विशेषज्ञों ने लंबे समय तक धूप में रहने वाले या भारी काम करने वाले लोगों में गर्मी से संबंधित बीमारियां बढ़ने की चेतावनी दी है। अमेरिका स्थित जलवायु वैज्ञानिकों के एक समूह 'क्लाइमेट सेंट्रल' ने कहा, भारत में 54 करोड़ 30 लाख लोगों को 18-21 मई के दौरान कम से कम एक दिन अत्यधिक गर्मी महसूस होगी। क्लाइमेट सेंट्रल में विज्ञान विभाग के उपाध्यक्ष एंड्रयू पर्सिंग ने कहा, मानव-जनित जलवायु परिवर्तन ने इस भीषण गर्मी को और अधिक विकराल बना दिया है। रात का उच्च तापमान जलवायु परिवर्तन को विशेष रूप से खतरनाक बना देता है।

# अमेरिका के खिलाफ रूस और चीन हुए एकजुट

**रूसी राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन चीन की यात्रा के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में नाटो के रुख को विनाशकारी बताया**

**दोनों देशों ने विध्वंसक गतिविधियां चलाने वाले विदेशी संगठनों का ब्यौरा साझा किया**

**मास्को (वार्ता)।** रूसी राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन के स्वदेश लौटने के बाद रूस ने कुछ देशों द्वारा चीन के खिलाफ विध्वंसक गतिविधियां चलाए जाने से संबंधित जानकारी चीन से साझा की है। रूस की संसद के निचले सदन ड्यूमा में विदेशी दखलअंदाजी की जांच के लिए गठित आयोग ने कुछ विदेशी संगठनों द्वारा रूस एवं चीन के खिलाफ विध्वंसक गतिविधियां चलाए जाने को लेकर चीन की सरकार को डॉजियर सौंपा है। आयोग के वासिली पिस्कारेव ने शनिवार को सोशल मीडिया पर यह जानकारी दी। इसके पहले चीन एवं रूस के राष्ट्रपतियों ने बीजिंग के ग्रेट हॉल ऑफ पीपुल्स में हुई महत्वपूर्ण बैठक में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नाटो के रुख को 'विनाशकारी' करार देते हुए पूर्वोत्तर एशिया में शक्ति संतुलन को बदल कर अमेरिकी आधिपत्य स्थापित करने के प्रयासों की निंदा की थी। बैठक के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत को 'असाधारण, गहन एवं सार्थक' बताया गया और वैश्विक राजनीति को प्रभावित करने वाली कई अहम घोषणाएं की गई।

पिस्कारेव ने कहा कि आयोग निकट भविष्य में 'नई चुनौतियों और खतरों' तथा रूस और चीन पर बढ़ते बाहरी दबाव के कारण संप्रभुता की रक्षा करने के लिए और चीनी भागीदारों के साथ विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध विधाई प्रतिकार करने के लिए अपनी अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान जारी रखने की योजना बना रहा है। चीन एवं रूस के राष्ट्रपतियों के बीच दो दिन पहले बीजिंग के ग्रेट हॉल ऑफ पीपुल्स में हुई एक महत्वपूर्ण बैठक में दोनों नेताओं ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नाटो के रुख को 'विनाशकारी' करार देने के साथ ही पूर्वोत्तर एशिया में शक्ति संतुलन को बदल कर अमेरिकी आधिपत्य स्थापित करने के प्रयासों की निंदा की थी। बैठक के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत को 'असाधारण, गहन एवं सार्थक' बताया गया और वैश्विक राजनीति को प्रभावित करने वाली कई अहम घोषणाएं की गई। वक्तव्य के अनुसार रूस और चीन के नेताओं ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में नाटो के रुख को 'विनाशकारी' करार दिया है और विभिन्न देशों से टकराव वाली नीतियां अपनाने, दूसरों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बंद करने का आह्वान किया है। चीन ने संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करने के रूस के प्रयासों का समर्थन तथा उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का विरोध किया है। वक्तव्य में कहा गया कि किसी भी राज्य को दूसरों की सुरक्षा की कीमत पर अपनी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करनी चाहिए। रूस, चीन ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के साथ राजनीति, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और मानवीय संबंधों में सहयोग की संभावनाओं को मजबूत करने का संकल्प जताया और सैन्य निर्माण के माध्यम से पूर्वोत्तर एशिया (विशेष रूप से उत्तर कोरिया के संदर्भ में) में शक्ति संतुलन बदलने के अमेरिकी आधिपत्य प्रयासों का विरोध व्यक्त किया है। वक्तव्य में रूस, चीन ने अलग-अलग देशों द्वारा सशस्त्र टकराव के लिए अंतरिक्ष का उपयोग करने के प्रयासों का विरोध किया तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए बहुपक्षीय, पारदर्शी वैश्विक इंटरनेट प्रशासन प्रणाली सुनिश्चित करने की वकालत की है। उल्लेखनीय है कि विश्व राजनीति के मौजूदा परिदृश्य में रूस एवं चीन अमेरिका एवं पश्चिमी देशों पर उनकी खुफिया एजेंसियों के माध्यम से उनके यहां विध्वंसक गतिविधियां चलाने का आरोप लगा रहे हैं। रूस एवं चीन के राष्ट्रपतियों के बीच बैठक में बातचीत के एजेंडा में यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा था। माना जाता है कि उसी शिखर बैठक में रूसी पक्ष ने यह डॉजियर चीनी पक्ष को सौपा है।

# जलवायु कार्यकर्ताओं ने म्यूनिख हवाई अड्डे को किया ठप

**म्यूनिख (आईएएनएस)।** जर्मनी के जलवायु कार्यकर्ता समूह लास्ट जेनरेशन के सदस्यों ने शनिवार ककुछ समय के लिए म्यूनिख हवाईअड्डे को ठप कर दिया। लास्ट जेनरेशन के कार्यकर्ता हवाईअड्डे प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रवेश कर गए जिससे कामकाज बाधित हो गया। शनिवार होने के कारण हवाई अड्डे पर भीड़ ज्यादा थी। इसके कारण कुछ समय के लिए हवाई अड्डे को बंद कर दिया गया।

हवाई अड्डे के अधिकारियों और संघीय पुलिस ने कहा कि सुरक्षा कारणों से हवाई अड्डे को शुरू में बंद कर दिया गया था। लगभग दो घंटे के बाद, दो रनवे में से एक को फिर से खोला गया, उसके लगभग एक घंटे बाद दूसरे रनवे को खोला गया। द लास्ट जेनरेशन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि म्यूनिख हवाई अड्डे पर अलग-अलग स्थानों पर छह लोग दो-दो के समूह में बैठे थे। कई पुलिस अधिकारी और अग्निशमन कर्मियों की मदद से कार्यकर्ताओं को हवाई अड्डे से हटाया गया।

संघीय पुलिस के प्रवक्ता ने कहा कि आठ लोगों ने शुरू में हवाईअड्डे की सुरक्षा बाड़ को तोड़कर एक ही समय में चार अलग-अलग बिंदुओं पर साइट में प्रवेश करने की कोशिश की।

हवाई अड्डे के प्रवक्ता ने कहा, हमने कुल 1,000 से कम टेक-ऑफ़ और लैंडिंग की योजना बनाई है। उड़ानों के सख्त तालमेल के कारण अभी भी कुछ देर के लिए देरी हो सकती है। जिन यात्रियों की शनिवार को उड़ानें बुक है, उन्हें एहतियात के तौर पर अपनी एयरलाइन से संपर्क करना चाहिए। कार्यकर्ताओं ने कहा कि वे व्हिटसन अवकाश सप्ताहांत की शुरुआत को बाधित करना चाहते थे।

# ट्रंप बहस करने से पहले बाइडन से ड्रग टेस्ट की करेंगे मांग

**वॉशिंगटन (वार्ता)।** अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ बहस करने से पहले ड्रग परीक्षण की मांग करेंगे। दोनों प्रतिद्वंद्वी जून और सितंबर में टेलीविजन पर दो दौर के बहस के लिए सहमत हुए हैं। ट्रंप ने कहा, मैं ड्रग टेस्ट की मांग करूंगा क्योंकि मै नहीं चाहता कि बाइडन स्टेट ऑफ द यूनियन की तरह आएं। बाइडन ने शुक्रवार को कहा कि वह पूर्व राष्ट्रपति के साथ आम चुनाव की बहस में भाग लेंगे और ऐसा करने पर उन्हें खुशी होगी। राष्ट्रपति की यह सहमति महत्वपूर्ण बदलाव है। इसके पहले उन्होंने अपने रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी के साथ मंच पर उपस्थित होने के लिए प्रतिबद्ध होने से इनकार कर दिया था।

### देश तीसरे विश्व युद्ध में फंस सकता है

**वॉशिंगटन(वार्ता)।** अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आशंका जताई है कि राष्ट्रपति चुनाव से पहले देश के अक्षम नेतृत्व के कारण तीसरा विश्व युद्ध छिड़ सकता है। ट्रंप ने मिनेसोटा राज्य में कहा, जिस तरह के मूर्ख लोग इस देश को चला रहे हैं, उससे बहुत से लोग नहीं बचेंगे क्योंकि आज हथियारों की शक्ति बहुत भयंकर है। हम अगले पांच महीनों में तीसरे विश्व युद्ध में फंस सकते है क्योंकि हमारा नेतृत्व अक्षम है। जिस तरह से देश को चलाने वाले लोग है, उससे जाहिर होता है कि देश बहुत जल्दी तीसरे विश्व युद्ध में फंस सकता है।

# यूएससीआईआरएफ में नहीं है हिंदुओं का प्रतिनिधित्व

**वॉशिंगटन(भाषा)।** अमेरिका में भारतीय समुदाय के शीर्ष 'थिंक टैंक' के प्रमुख का कहना है कि हिंदू समुदाय का अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यूएससीआईआरएफ) में प्रतिनिधित्व नहीं है जिसके कारण यूएससीआईआरएफ भारत और हिंदुओं के संबंध में पक्षपातपूर्ण, अवैज्ञानिक और एकतरफा रिपोर्ट पेश कर रहा है। 'फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज' (एफआईआईडीएस) में नीति और रणनीति के प्रमुख खंडेराव कांड ने कहा ने कहा, हिंदू धर्म के लोग अमेरिकी आबादी का एक प्रतिशत हिस्सा है और यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है इसके बावजूद आयोग में इस धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं है।

खंडेराव कांड ने 'फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज' (एफआईआईडीएस) में नीति और रणनीति के प्रमुख खंडेराव कांड ने कहा, आयोग ने नियुक्ति के जरिए विविधता और संतुलन लाने का ऐतिहासिक अवसर गंवा दिया है। इस धरती पर हर छह में से एक व्यक्ति हिंदू धर्म से संबंध रखता है। आयोग में इस धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं है, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट में विविधता नहीं आ पाएगी और उचित संतुलन नहीं बन पाएगा। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर यूएससीआईआरएफ की वार्षिक रिपोर्ट भारत के प्रति पक्षपातपूर्ण है। हमने आम तौर पर और इस साल भी देखा है कि यह रिपोर्ट भारत के प्रति पक्षपाती है। इस रिपोर्ट में पूरी बात नहीं होती। इसमें कुछ तथ्य पेश किए जाते है, लेकिन सभी तथ्य पेश नहीं किए जाते और कई तथ्यों को छुपाया जाता है।

# दुनिया में पहली बार 6.3 सेमी. के विशाल एन्यूरिज्म का सफल ऑपरेशन

**अस्तपाल के न्यूरो सर्जरी के विभाग के चिकित्सकों के सफल ऑपरेशन के बाद रोगी पूरी तरह स्वस्थ**

**ऋषिकेश।** हिमालयन अस्पताल जौलीग्रांट के न्यूरोसर्जरी विभाग के चिकित्सकों की टीम ने दुनिया में अब तक सबसे बड़े ब्रेन एन्युरिज्म की सफलतापूर्वक क्लिपिंग सर्जरी कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। दुनिया में पहली बार 6.3 सेमी. के विशाल एन्यूरिज्म का ऑपरेशन किया।

अस्पताल के वरिष्ठ न्यूरोसर्जन डा. बृजेश तिवारी ने बताया कि देहरादून निवासी 17 वर्षीय युवक आशीष पन्द्रह दिनों से सिरदर्द और रूक-रूक कर हो रही उल्टी की शिकायत को लेकर उनकी ओपीडी में आए। इसके बाद आशीष के मस्तिष्क की एमआरआई सहित विभिन्न स्वास्थ्य जांचें करवाई गई। एमआरआई जांच में मस्तिष्क के बांयी ओर के आगे के हिस्से में सामान्य से ज्यादा सूजन देखी गई। न्यूरोसर्जरी टीम के चिकित्सकों ने युवक का एंजियोग्राम करवाया। चिकित्सकों ने उसमें 6.3 सेमी का एक अति विशाल एन्यूरिज्म है। डा. तिवारी ने बताया कि इतने बड़े एन्यूरिज्म की गर्दन पर क्लिप लगाना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था। क्योंकि सर्जरी के दौरान होने वाला रक्तस्राव मरीज की जान को खतरे में डाल सकता था। आशीष और उसके परिजनों ने हिमालयन अस्पताल जौलीग्रांट में न्यूरोसर्जरी की टीम पर भरोसा किया और ऑपरेशन कराने का फैसला किया, जिस पर डा. रंजीत कुमार और डा. संजीव पांडेय के सहयोग से टीम ने इस जटिल सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। सर्जरी के बाद अब आशीष पूरी तरह स्वस्थ है। स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय (एसआरएचयू) के अध्यक्ष डा. विजय धस्माना ने टीम को इस शानदार सफलता पर बधाई दी। वहीं, हिमालयन अस्पताल के निदेशक (स्वास्थ्य सेवा) डा. हेमचंद्र पांडे ने बताया कि हिमालयन अस्पताल जौलीग्रांट का न्यूरोसर्जरी विभाग ब्रेन व स्पाईन संबंधित सर्जरी में विश्वस्तरीय है।

# अफगानिस्तान : बाढ़ से 68 लोगों की मौत

**इस्लामाबाद (एपी)।** अफगानिस्तान में भारी बारिश के कारण कई जगह पर अचानक बाढ़ आने से कम से कम 68 लोगों की मौत हो गई। मृतकों की संख्या प्रारंभिक सूचनाओं पर आधारित है। अफगानिस्तान में भारी मौसमी बारिश हो रही है। प्रांतीय गवर्नर के प्रवक्ता अब्दुल वाहिद हमास ने कहा कि बुरी तरह प्रभावित गोर प्रांत में 50 लोगों की मौत होने की खबर है।

उन्होंने यह भी कहा कि शुक्रवार की बाढ़ के बाद राजधानी फिरोज कोह समेत विभिन्न क्षेत्रों में हजारों मकानों व संपत्तियों के क्षतिग्रस्त होने और सैकड़ों हेक्टेयर कृषि भूमि के प्रभावित होने से प्रांत को काफी वित्तीय नुकसान हुआ है। इस बीच, प्रांतीय गवर्नर के प्रवक्ता इस्मातुल्ला मुरादी के अनुसार, शुक्रवार को उत्तरी प्रांत फरयाब में 18 लोग मारे गए और दो अन्य घायल हुए।

उन्होंने बताया कि चार जिलों में संपत्ति और भूमि को नुकसान हुआ है और 300 से अधिक जानवर मारे गए हैं। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एजेंसी ने पिछले हफ्ते कहा था कि अफगानिस्तान में असामान्यरूप से हुई भारी बारिश के कारण 300 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और हजारों मकान नष्ट हुए हैं।

# छत्तीसगढ में मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर

**सुकमा, (भाषा)।** छत्तीसगढ के नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में एक नक्सली मारा गया। पुलिस अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के तोलनाई और टेटराई गांव के मध्य वन क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में एक नक्सली को मार गिराया है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में नक्सली गतिविधि की सूचना मिलने के बाद शुक्रवार रात सुरक्षाबलों को रवाना किया गया था। दल जब आज सुबह तोलनाई और टेटराई गांव के मध्य वन क्षेत्र में पहुंचा तब नक्सलियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई की।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबलों ने घटनास्थल से एक नक्सली का शव, एक बंदूक और भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद किया है। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ में मारे गए नक्सली की शिनाख्त की जा रही है। क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ अभियान जारी है। इस घटना के साथ ही इस साल राज्य में सुरक्षा बलों के साथ अलग-अलग मुठभेड़ों में अब तक 105 नक्सली मारे जा चुके हैं। इससे पहले 10 मई को बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में 12 नक्सली मारे गए थे। वहीं 30 अप्रैल को नारायणपुर और कांकेर जिले की सीमा पर सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में तीन महिलाओं सहित 10 नक्सली मारे गए थे। इससे पहले सुरक्षाबलों ने 16 अप्रैल को राज्य के कांकेर जिले में मुठभेड़ में 29 नक्सलियों को मार गिराया था।

# तृणमूल कार्यकता की हत्या का आरोपी पोर्ट ब्लेयर से गिरफ्तार

**■ पोर्ट ब्लेयर (भाषा)।**

कोलकाता के बागुईआटी इलाके में तृणमूल कांग्रेस के एक कार्यकर्ता की हत्या के मामले में पोर्ट ब्लेयर से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। उसने बताया कि संजीव दास की 27 अप्रैल को कथित रूप से तृणमूल के दो गुटों के बीच झड़प में मौत हो गई थी। दास को पोटला के नाम से भी जाना जाता था। पुलिस ने बताया कि दक्षिण अंडमान पुलिस और विधाननगर पुलिस आयुक्तालय ने संयुक्त अभियान चलाकर पोर्ट ब्लेयर के एबरडीन बाजार में एक लॉज से कपिल देब नाम के एक व्यवसायी को 16 मई को गिरफ्तार कर लिया।

दक्षिण अंडमान की पुलिस अधीक्षक निहारिका भट्ट ने कहा, 'पश्चिम बंगाल पुलिस ने आरोपियों के बारे में जानकारी साझा की जिसके बाद हमने तुरंत तलाश शुरू कर दी। इस बीच, पश्चिम बंगाल से अधिकारियों का एक दल भी यहां पहुंच गया और हमने एक संयुक्त अभियान चलाकर कपिल देब को एबरडीन बाजार से गिरफ्तार कर लिया।'

उन्होंने कहा, 'जांच से पता चला कि कपिल अन्य लोगों के साथ मिलकर अपराध को अंजाम देने के बाद विमान से पोर्ट ब्लेयर भाग आया था। उसे 'ट्रांजिट रिमांड' पर पश्चिम बंगाल ले जाया गया। वह 'न्यू टाउन' और उसके आसपास के इलाकों में होटलों का मालिक है।' पुलिस ने बताया कि इस मामले में कपिल समेत अब तक 18 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है और सभी गिरफ्तारियां मृतक की बेटी पायल दास की शिकायत के आधार पर की गई है। उसने बताया था कि बागुईआटी पुलिस थाना क्षेत्र के अर्जुनपुर वेस्ट पारा में हुई झड़प के दौरान दोनों तरफ से ईंट-पत्थर फेंके जाने की घटना में दास गंभीर रूप से घायल हो गया था और बाद में उसे अस्पताल में चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया था। पुलिस ने बताया कि दास 11 मामलों में आरोपी था जिनमें शस्त्र अधिनियम से संबंधित मामले भी शामिल थे। दास के परिवार ने आरोप लगाया कि हत्या के पीछे स्थानीय पार्षद के करीबी तृणमूल कार्यकर्ताओं का हाथ है।

**अगर आप किसी प्रापर्टी को खरीदने पर विचार कर रहे हैं तो उससे जुड़े कागजात देखते वक्त संपत्ति के टाइटल से जुड़े कागजात अवश्य देखें। अगर संपत्ति का टाइटल क्लियर नहीं होगा तो आपका निवेश फंस सकता है। संपत्ति खरीदते वक्त आप विक्रेता से संपत्ति का ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट और कम्प्लीशन सर्टिफिकेट की एक प्रति अवश्य मांग लें। इससे संपत्ति का टाइटल भी क्लियर हो जाएगा और आपका निवेश भी सुरक्षित रहेगा**

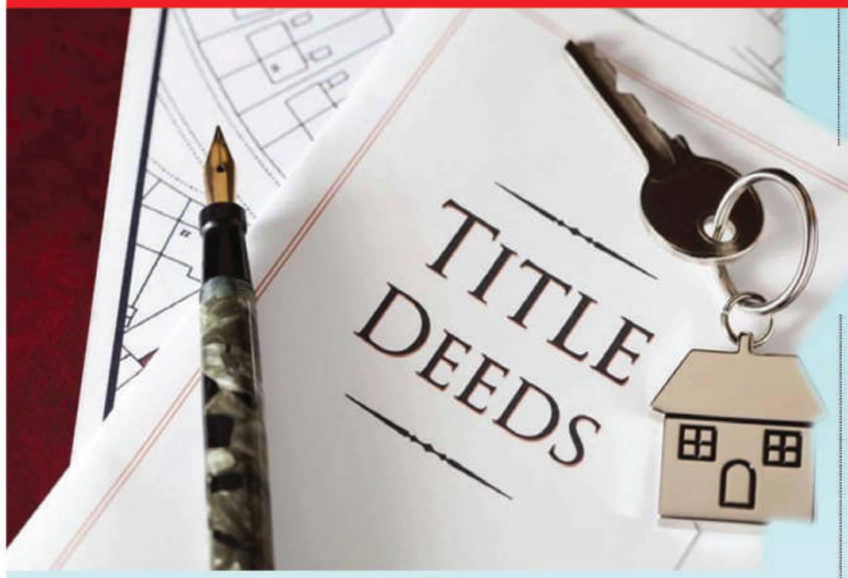


# संपत्ति का टाइटल क्लियर नहीं तो फंस सकता है निवेश

प्रदीप मिश्रा
एक्सपर्ट, रियल एस्टेट

आप चाहे शेयर बाजार में निवेश करें, म्यूचुअल फंड्स में या फिर रियल्टी सेक्टर में जरूरी यह है कि आपके द्वारा किये गए निवेश के दस्तावेज यह स्पष्ट इशारा करने में सक्षम हों कि उन सभी का मालिकाना हक आपका है। साथ ही दस्तावेज इस कदर पुख्ता भी हों कि कोई उन्हें चुनौती न दे सके। जहां तक रियल्टी सेक्टर का सवाल है तो मै एक बार फिर दोहरा रहा हूं कि संपत्ति का मालिकाना हक या फिर उसका स्वामित्व उसके कागजों से ही बयां होता है। ऐसे में यदि आप सीधे किसी डेवलपर या बिल्डर से कोई संपत्ति खरीद रहे है तो उस परिस्थिति में दो तरह के कागजों ऑक्यूपेंसी या ऑक्यूपेशन प्रमाणपत्र और कम्प्लीशन प्रमाणपत्र को प्राप्त करना कतई न भूलें क्योंकि इन दोनों कागजों के अभाव में उस परियोजना में किए गए आपके निवेश पर आप क्लियर टाइटल यानी कि अपना पूर्ण मालिकाना हक साबित नहीं कर सकेंगे। आइये इन दोनों कागजातों की अहमियत जान लेते हैं।

## ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट

ऑक्यूपेशन या ऑक्यूपेंसी सर्टिफिकेट किसी शहर की नगर निगम या फिर नगर पालिका प्राधिकरणों की तरफ से जारी किया जाता है। इस सर्टिफिकेट से यह साबित होता है कि उस इमारत में निर्माण संबंधी विभिन्न मानदंडों जैसे सुरक्षा, अग्निशमन यानी फायर फाइटिंग उपकरण, इमारत की भूकंपरोधी संरचना वगैरह का पूरी तरह से पालन किया गया है। यह बात आप भी अच्छी तरह जानते है कि मौजूदा समय में इमारतों का निर्माण वर्टिकल रूप में यानी आकाश की तरफ या गगनचुंबी इमारतों के रूप में हो रहा है। देश का उत्तरी हिस्सा भूकंप के दृष्टिकोण से बेहद संवेदनशील माना जाता है। ऐसे में जरूरी है कि जिस इमारत में आपने निवेश किया है वह ऐसे सुरक्षा मानदंडों पर खरी उतरती हो। इसके अलावा बिना ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट के स्थानीय निगम या नगरपालिका की तरफ से पानी और बिजली के अलावा सीवेज के कनेक्शन की अनुमति नहीं दी जाती है जो कि किसी भी क्षेत्र में लोगों को बसाने के लिए मौलिक जरूरतों में से एक है। गगनचुंबी या मल्टीस्टोरी इमारतों के लिए तो ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट इसलिए भी लाजिमी है क्योंकि इसी दस्तावेज से यह जानकारी मिलती है कि कोई इमारत लोगों के रहने के लिए तैयार है।

यहां इस बात पर भी गौर करने की जरूरत है कि जैसे आपने किसी ऐसी परियोजना में निवेश किया है जिसमें दस टावरों का निर्माण किया जाना हो। अब जिस समय आपको आपके टावर में बिल्डर की तरफ से पजेशन अर्थात कब्जे की पेशकश की जाए संभव है कि उस वक्त सिर्फ छह टावर ही पूरी तरफ से तैयार हुए हों और बाकी दो में काम ही चल रहा हो। ऐसी स्थिति में भी स्थानीय निकाय तैयार टावरों के लिए जरूरी जांच-परख के बाद ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट जारी कर देते है लेकिन जरूरी है कि जब आप अपनी संपत्ति का कब्जा लें तो इस कागज का जरूर प्राप्त कर लें। यहां आपके जेहन में यह सवाल भी अवश्य उठ रहा होगा कि जब परियोजना के पूरे दस टावरों का निर्माण हो जायेगा तो क्या उस समय भी बिल्डर से कोई कागज प्राप्त करना होगा? तो इस जवाब है हां... आइए अब इस बारे में जानते है।

## कम्प्लीशन सर्टिफिकेट

कम्प्लीशन सर्टिफिकेट वह दस्तावेज है जिसको ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट की ही तरह स्थानीय निकाय की तरफ से ही जारी किया जाता है। यह दस्तावेज यह प्रमाणित करता है कि इमारतों के साथ ही साथ पूरी परियोजना को स्वीकृत दिशानिर्देशों के अनुसार बनाया गया है। यह दस्तावेज यह भी बताता है कि परियोजना में न सिर्फआवासीय टावरों के साथ ही यदि वहां किसी कॉमर्शियल या शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण प्रस्तावित रहा हो तो वह भी बनकर तैयार है। खेलकूद, मनोरंजन गतिविधियों के लिए किया जाने वाला निर्माण पूरा हो गया है। इसके अलावा कॉमन एरिया जैसे पार्क, पार्किंग के अलावा ऐसी जगह पर लाइटिंग वगैरह का काम भी पूरा हो गया है। कम शब्दों में कहें तो परियोजना के संबंध में निर्माण से पूर्व जिन बातों को प्रस्तावित किया गया था, तय दिशानिर्देशों के साथ उसी रूप में सभी चीजें बनाकर तैयार कर दी गई है और अब वहां किसी भी तरह के निर्माण की कोई गुंजाइश नहीं बची है। बिल्डर की तरफ से स्थानीय निकाय को यह सूचना दिये जाने के बाद निकायों की तरफ से एक बार फिर आवश्यक जांच की जाती है और सब कुछ नियमों के अनुसार दुरुस्त पाये जाने के बाद बिल्डर को कम्प्लीशन सर्टिफिकेट जारी कर दिया जाता है। अब यहां जरूरी है कि जैसे ही बिल्डर की तरफ से आपको निर्माण कार्य पूरा होते दिखाये दे आप अपने बिल्डर या डेवलपर से संपर्क करके कम्प्लीशन सर्टिफिकेट की एक प्रति को प्राप्त कर लें। यह जान लें कि इन दोनों कागजों के अभाव में अगर आप अपनी संपत्ति को बेचने के लिए निकलते है तो आपको संपत्ति के मनमाफिक और मुंह मांगे दाम नहीं मिल सकेंगे। यह ध्यान रखें कि कम्प्लीशन सर्टिफिकेट को प्राप्त करना कानूनन आवश्यक है, क्योंकि इसी से यह बात पता चलती है कि परियोजना के निर्माण के दौरान सभी नियमों एवं प्रतिबंधों, पर्यावरणीय मानकों, और सुरक्षा विनियमनों का तय निर्देशों के अनुसार पालन किया गया है। यह प्रमाणपत्र संपत्ति लेन-देन को सुविधाजनक बनाने के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि यह संभावित खरीदारों और वित्तीय संस्थानों को संपत्ति के विनियमनों के प्रति अनुपालन का आश्वासन देता है।

## इस पर भी करें गौर

कई मामलों के ऐसा भी देखने को मिलता है कि बिल्डर्स निर्माण के दौरान तय मानकों का पालन नहीं करते है और कम्प्लीशन सर्टिफिकेट के बजाए संपत्ति के ऐंड यूजर्स और निवेशकों को फिट आउट सर्टिफिकेट जारी कर देते है। यहां गौर करने की बात यह है कि फिट आउट सर्टिफिकेट से इस बात का पता चलता है कि किसी इमारत में उसके इंटीरियर का काम भी पूरा हो गया है यानी फर्श, दीवारों पर पेंट, जरूरी वुड वर्क जैसे दरवाजे-खिड़की, बिजली के उपकरणों के लिए स्विच बोर्ड वगैरह लगाये जा चुके है और निर्माण प्रक्रिया पूरी हो गई है। लेकिन फिट आउट सर्टिफिकेट बिल्डर या डेवलपर अपने स्तर पर जारी करता है जिसमें स्थानीय निकाय की कोई भूमिका नहीं रहती है। स्थानीय निकाय की तरफ से जब कम्प्लीशन सर्टिफिकेट जारी कर दिया जाता है तभी सरकारी तौर पर उस परियोजना के निर्माण की प्रक्रिया पूरी मानी और समझी जाती है। इस प्रमाण पत्र से ही प्रमाणित होता है कि उस परियोजना की इमारतें रहने के लिए सुरक्षित है और रहने योग्य है। यहां मै एक बार यह कहूंगा कि यह दोनों ही सर्टिफिकेट महज औपचारिकता मात्र नहीं बल्कि संपत्तियों की सुरक्षा, कानूनी तौर पर निवास को सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण दस्तावेज भी है जो न केवल घर खरीदने वालों के हितों की रक्षा में मदद करते है साथ ही शहरी विकास के विश्वसनीयता को बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाते है। ■

# नियमित पेंशन पाने को कहां करें निवेश

जब कोई व्यक्ति किसी निजी कंपनी में अपनी पहली नौकरी शुरू करता है तो उस वक्त जब उसके हाथ में पहली सैलरी आती है तो वह अपनी सारी चिंताएं भूल जाता है और अपनी जिंदगी को एन्जॉय करना शुरू कर देता है। उसे अपने भविष्य की कोई चिंता नहीं रहती। यहां तक कि वह यह भी नहीं सोचता कि उसकी नौकरी में रिटायरमेंट के बाद पेंशन की सुविधा नहीं है ऐसे में वह अपना बुढ़ापा कैसे गुजारेगा। ऐसे लोगों को अपनी इस सोच से बाहर आना चाहिए और नौकरी की शुरुआत के साथ ही अपने रिटायरमेंट की प्लानिंग पर भी ध्यान देना चाहिए। सबसे अच्छी रिटायरमेंट प्लानिंग वही कही जाएगी जिसमें रिटायरमेंट के बाद आपके हाथ में मासिक तौर पर कुछ रकम आती रहे। इस तरह की कई निवेश योजनाएं हैं जिसमें पूंजी लगाकर आप अपने रिटायरमेंट के बाद नियमित रूप से मासिक आय अर्जित कर सकते हैं। आइए आज हम आपको इन निवेश योजनाओं में से चुनींदा योजनाओं के बारे में बताने की कोशिश करते हैं। आप इन योजनाओं में अपने विवेक के अनुसार निवेश करके अपने रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी को खूबसूरत बना सकते हैं।

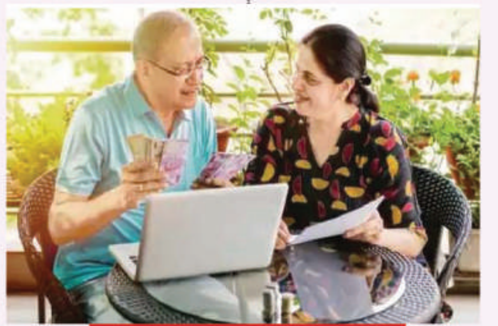

**अगर आप निजी क्षेत्र में की किसी कंपनी में कार्य करते हैं और वहां रिटायरमेंट के बाद पेंशन की सुविधा नहीं है तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। हम आपको कुछ ऐसी निवेश योजनाओं के बारे में बता रहे हैं जहां हर महीने छोटी-छोटी रकम जमा करके रिटायरमेंट के बाद नियमित पेंशन हासिल की जा सकती है। आइए देखते हैं कि ऐसी कौन सी योजनाएं हैं जिनमें निवेश करके आप रिटायरमेंट के बाद पेंशन की चिंता से छुटकारा पा सकते हैं**

## वरिष्ठ नागरिक बचत योजना

यह योजना ऐसे लोगों के लिए है जिन्होंने अपनी नौकरी के शुरुआती दिनों में अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग के नाम पर कोई निवेश नहीं किया। योजना के तहत 60 साल या इससे ज्यादा उम्र के लोग खाता खोल सकते हैं। ऐसे लोग रिटायरमेंट के वक्त मिली रकम में से कुछ रकम इस योजना में पांच साल के लिए निवेश कर सकते हैं। इस निवेश को एक बार तीन साल के लिए बढ़ाया भी जा सकता है। योजना के तहत 8.20 फीसद की दर से ब्याज दिया जाता है। ब्याज दरों में सरकार तिमाही आधार पर बदलाव कर सकती है। योजना के तहत न्यूनतम एक हजार रुपये और अधिकतम 30 लाख रुपये निवेश किए जा सकते हैं। योजना के तहत आयकर कानून की धारा 80 सीसी के तहत डेढ़ लाख रुपये तक की आय पर आयकर छूट भी मिलती है।

## अटल पेंशन योजना

अटल पेंशन योजना में 18 से 40 साल की उम्र वे व्यक्ति निवेश कर सकते है। योजना में कम से कम 20 साल तक निवेश करना जरूरी है। यह निवेश मासिक, तिमाही अथवा छमाही आधार पर कर सकते हैं। योजना में 42 रुपये से लेकर 210 रुपये प्रतिमाह निवेश करके एक हजार रुपये से पांच हजार रुपये तक की पेंशन प्राप्त की जा सकती है। अगर निवेशक की 60 साल की उम्र से पहले मृत्यु हो जाती है तो पार्टनर पेंशन फंड में निवेश करना जारी रख सकता है अथवा अब तक निवेश की गई रकम को निकाल भी सकता है। 60 साल की उम्र के बाद निवेशक की मृत्यु होने पर जमा की गई राशि नॉमिनी को दी जाएगी।

## डाकघर की मासिक आय योजना

यह एक मासिक पेंशन योजना है। इसमें एकमुश्त निवेश करके पांच साल तक मासिक पेंशन प्राप्त की जा सकती है। पांच साल बाद जमा की गई राशि वापस कर दी जाती है। इस योजना में सालाना 7.4% ब्याज मिलता है जो हर महीने दिया जाता है। इसमें अधिकतम निवेश राशि एक व्यक्ति के लिए 9 लाख रुपये और दंपति के लिए 15 लाख रुपये है। एक व्यक्ति को अधिकतम 5,550 रुपये मासिक पेंशन मिल सकती है जबकि दंपति को अधिकतम 9,250 रुपये मासिक आय प्राप्त हो सकती है।

## म्यूचुअल फंड की पेंशन योजना

म्यूच्यूअल फंड का सिस्टेमेटिक विड्राल प्लान भी इसी तरह की एक योजना है। जिसमें रिटायरमेंट के वक्त मिली रकम का कुछ हिस्सा एकमुश्त निवेश करके निवेश अवधि के दौरान हर माह पेंशन के तौर पर कुछ रकम मिल जाती है। यह प्लान चूंकि इक्विटी मार्केट से जुड़ा होता है इसलिये इसमें आय में कमी या वृद्धि भी होती रहती है। निवेश की अवधि पूरी होने के बाद जितनी भी रकम खाते में बची होगी वह निवेशक को वापस मिल जाएगी।

## बैंकों की फिक्स्ड डिपाजिट स्कीम

रिटायरमेंट के बाद एकमुश्त रकम को किसी बैंक एफडी में निवेश करके भी अच्छा रिटर्न हासिल किया जा सकता है। मान लीजिये आपने रिटायरमेंट के वक्त मिली रकम में से दस लाख रुपये बैंक एफडी में पांच साल के लिए निवेश कर दिये और इस पर आपको सालाना आठ फीसद ब्याज मिला तो पांच साल में आपको इस एफडी पर करीब 4.85 लाख रुपये अतिरिक्त मिलेंगे। हालांकि यह रकम आपको एफडी की मैच्योरिटी पर मिलेगी लेकिन इसे आप अपने मंथली खर्च के हिसाब से एडजस्ट कर सकते हैं। कुछ बैंक एफडी ऐसी भी होती हैं जिनमें आप मंथली इंटरेस्ट प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यह इंटरेस्ट रेट कुछ कम होता है। ■

# सिल्वर ईटीएफ में निवेश हो सकता है फायदेमंद

कमाल अहमद रूमी
आर्थिक पत्रकार

**सोना अपनी कीमतों को लेकर हमेशा से सुर्खियों में बना रहता है। लेकिन इस बार चांदी के दाम ने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। मई में चांदी के दाम 90 हजार रुपये प्रति किलो तक जा पहुंचे हैं जिसके चलते निवेशक इस तरफ अपना निवेश बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं। सवाल यह उठता है कि अचानक ऐसा क्या हो गया कि चांदी के भाव इतना ज्यादा ऊपर जा पहुंचे। आइए आज हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि चांदी के भावों में आई तेजी की वजह क्या है**

देश में चांदी की कीमतें एक लाख रुपये प्रति किलो के नजदीक पहुंचते ही निवेशकों के कान खड़े हो गए हैं और वे सोने में निवेश छोड़कर चांदी की बढ़ती कीमतों का विश्लेषण करने में लग गए हैं। जी... हां... दो दिन पहले चांदी के भाव 90 हजार रुपये प्रति किलो के स्तर पर जा पहुंचे। ऐसे में निवेशकों और कारोबारियों को यह संभावनाएं दिखाई देने लगी हैं कि कहीं चांदी की कीमत एक लाख रुपये प्रति किलो को पार न कर जाए। वैसे तो सोना हमेशा निवेशकों को आकर्षित करता रहा है और इसके भाव भी बीते दस वर्षों में ही लगभग 50 हजार रुपये तक चढ़ गए। लेकिन चांदी में आए मौजूदा उछाल से निवेशकों में जहां उम्मीद की एक नई किरण जगी है वहीं कारोबारियों को यह आशंका है कि चांदी बहुत ज्यादा महंगी होने से निवेशक बाजार से दूरी बना सकते हैं।

## क्यों बढ़े चांदी के भाव

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि चांदी की कीमतों में तेजी की मुख्य वजह वैश्विक भूराजनैतिक तनाव, औद्योगिक व घरेलू मांग का अचानक बढ़ जाना और निवेशकों की तरफ से भी इसकी ज्यादा मांग निकलना है। विश्लेषक मानते हैं कि भूराजनैतिक तनाव के कारण दुनिया में अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। इस कारण शेयर बाजारों में भी अनिश्चितता पैदा हो गई है। इसी के चलते निवेशकों का रुझान अब शेयर बाजारों की ओर से हटकर कमोडिटी बाजार खासकर धातुओं में निवेश के प्रति बढ़ा है। चांदी की बढ़ती कीमतें भी यह बताती हैं कि इस धातु के प्रति निवेशकों की मांग काफी बढ़ी है। इसके अलावा चांदी की औद्योगिक मांग भी काफी तेज हो गई है। जबकि सोने की ऊंची कीमतों ने आम आदमी को भी चांदी की तरफ देखने को मजबूर कर दिया है। जिन देशों में शादी ब्याह में सोने के आभूषणों का चलन है उन देशों में लोग अब चांदी के आभूषणों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

## चांदी ने दिया शानदार रिटर्न

चांदी ने पिछले एक साल में निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। अगर देखा जाए तो सिर्फ एक साल में ही चांदी में निवेश करने वालों को लगभग 20 फीसद रिटर्न हासिल हुआ है। बीते एक साल में चांदी के भाव लगभग 14 से 15 हजार रुपये चढ़ चुके हैं। हालांकि चांदी में इतना ज्यादा रिटर्न कभी कभार ही देखने को मिलता है। अलबत्ता मार्च 2020 से अप्रैल 2021 के बीच चांदी ने अब तक का सबसे ज्यादा 70 फीसद तक का रिटर्न दिया था। गौरतलब है कि सोने में निवेश करने वालों को अमूमन 15 से 20 फीसद के बीच का ही रिटर्न प्राप्त होता है लेकिन इस बार चांदी ने निवेशकों की खूब कमाई कराई।

## चांदी में कैसे करें निवेश

अगर चांदी की बढ़ती कीमतों को देखकर आपको लगता है कि भविष्य में भी इसके दाम ऊपर को जाएंगे तो आपके लिए यह निवेश का अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। चांदी में निवेश के लिए कई विकल्प हैं। इनमें से एक विकल्प सिल्वर ईटीएफ का भी है। ईटीएफ यानी एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स में जमा होने वाला पैसा अलग-अलग तरह के संपत्तियों में निवेश किया जाता है। जिस तरह म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले को उसके निवेश की प्रति इकाई पर एनएवी मिलती है ठीक उसी तरह सिल्वर ईटीएफ में भी जो पैसा चांदी में निवेश किया जाता है उसपर एनएवी का दाम चांदी के भाव के आधार पर तय होता है। अगर चांदी के भाव लगातार बढ़ते जाते हैं तो एनएवी की वैल्यु भी बढ़ती जाती है। सिल्वर ईटीएफ में जमा होने वाला पैसा चांदी के बिस्कुटों में या ऐसे माध्यमों में लगाया जाता है जो चांदी में निवेश करते हैं। अगर आप सिल्वर ईटीएफ में पैसा लगाते है तो इसका फायदा यह है कि इसकी सुरक्षा को लेकर चिंता करने की जरूरत नहीं होती लेकिन अगर आप भौतिक रूप से चांदी खरीदते हैं तो उसके रखने व सुरक्षा की चिंता भी होती है।

## सिल्वर ईटीएफ में निवेश के लाभ

सिल्वर ईटीएफ के तहत निवेशक जो चांदी खरीदते हैं वह 99.99 फीसद शुद्ध होती है। इसलिए सिल्वर ईटीएफ में निवेश करने वालों को शुद्धता के बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं होती। महंगाई दर की तुलना में सोने और चांदी की कीमतें ज्यादा तेजी से बढ़ती हैं इसलिये महंगाई बढ़ने पर अगर जरूरत पड़े तो इसको बेचकर मुनाफा कमाया जा सकता है। इसके अलावा चूंकि ईटीएफ निवेश का डिजिटल प्रारूप है इसलिये सिल्वर ईटीएफ निवेशकों को चांदी को रखने व इसकी सुरक्षा करने की चिंता नहीं रहती। अक्सर कई निवेशक सिल्वर ईटीएफ के साथ-साथ इक्विटी बाजार, बीमा, म्यूचुअल फंड में भी निवेश करते हैं जिसके चलते निवेश में विविधता रहती है और जोखिम कम होता है।

## कैपिटल गेन टैक्स

निवेशक अगर चांदी से जुड़ी परिसंपत्तियों में अपने निवेश को तीन वर्ष से ज्यादा समय तक के लिए रखता है तो उस पर लांग टर्म कैपिटल गेन टैक्स लग सकता है। इसके अलावा अगर निवेश को तीन साल से कम अवधि के लिए रखा गया है तो उस पर शार्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स लागू होगा। ■

## हार्दिक पंड्या एक मैच के लिए निलंबित

**मुंबई।** मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पंड्या को धीमी ओवर गति के लिए एक मैच के लिए निलंबित कर दिया गया है। अब वह अगले सीजन का पहला मैच नहीं खेल पाएंगे। वानखेड़े स्टेडियम में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ उनकी टीम समय पर अपने ओवर ख़त्म नहीं कर पाई थी। एमआई के लिए यह मैच आईपीएल के मौजूदा सत्र का आखिरी मैच था। इसका मतलब यह हुआ कि हार्दिक अगले सीजन का पहला मैच नहीं खेल पाएंगे। यदि हार्दिक अगले सीजन के लिए किसी अन्य टीम में चले जाते हैं, तो वह उस विशेष टीम का पहला मैच नहीं खेल पाएंगे। इस आईपीएल सीजन में यह तीसरी बार था जब एमआई न्यूनतम ओवर रेट बनाए रखने में विफल रहा। परिणामस्वरूप एक मैच के प्रतिबंध के अलावा हार्दिक पर 30 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया।

# सात्विक-चिराग की जोड़ी थाईलैंड ओपन के फाइनल में

## अब चेन बो यांग-लियू यी से होगी खिताबी टक्कर

**नई दिल्ली।** विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर काबिज सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय पुरुष युगल ने शनिवार को जीत दर्ज की। इस जोड़ी ने चीनी ताइपे के लू मिंग-चे और तांग काई-वेई की जोड़ी पर आसान जीत हासिल की। इसी के साथ सात्विक-चिराग की जोड़ी थाईलैंड ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंच गई। एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सात्विक और चिराग को सुपर 500 स्तर के इस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल को जीतने में महज 35 मिनट का समय लगा। उन्होंने 21-11, 21-12 से आसान जीत दर्ज की। टूर्नामेंट में शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय जोड़ी के सामने खिताबी मुकाबले में चेन बो यांग और लियू यी की जोड़ी की चुनौती होगी। चीन की इस जोड़ी ने दूसरे सेमीफाइनल में दक्षिण कोरिया के किम गी जंग और किम सा रंग की जोड़ी को 21-19, 21-18 से हराया। बता दें कि, भारत की शीर्ष पुरुष डबल्स जोड़ी सात्विक-साईराज रेंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने थाईलैंड ओपन में मलेशिया के जुनैदी आरिफऔर रॉय किंग याप पर सीधे गेम में जीत के साथ सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की की थी। विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान काबिज भारतीय जोड़ी ने इस सुपर 500 टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में आरिफ और याप पर 21-7, 21-14 से आसान जीत हासिल की। एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता भारतीय जोड़ी का सामना अंतिम चार चरण में चीनी ताइपे के लू मिंग-चे और तांग काई-वेई की जोड़ी से हुआ।

### प्लेऑफ के लिए यश दयाल के अंतिम ओवर में धोनी-जडेजा को 17 रन बनाने थे, लेकिन सात रन ही बना सके

# लगातार छह जीत से प्लेऑफ में आरसीबी

### आखिरी चार गेंद में दयाल ने सिर्फ एक रन दिया

आखिरी ओवर में चेन्नई को 17 रन चाहिए थे। धोनी ने यश दयाल की पहली गेंद पर छक्का मारा। लेकिन दूसरी गेंद पर वह आउट हो गए। अगली चार गेंद पर दयाल ने सिर्फ एक रन दिए और अपनी टीम को प्लेऑफ में पहुंचा दिया। अंतिम दो गेंद में जडेजा एक रन भी नहीं बना सके।

**आईपीएल 2024 अंक तालिका**

| टीम | मैच | जीते | हारे | अंक | रन रेट |
|---|---|---|---|---|---|
| कोलकाता | 13 | 9 | 3 | 19 | 1.428 |
| राजस्थान | 13 | 8 | 5 | 16 | 0.273 |
| हैदराबाद | 13 | 7 | 5 | 15 | 0.406 |
| बेंगलुरु | 14 | 7 | 7 | 14 | 0.459 |
| चेन्नई | 14 | 7 | 7 | 14 | 0.392 |
| दिल्ली | 14 | 7 | 7 | 14 | -0.377 |
| लखनऊ | 14 | 7 | 7 | 14 | -0.787 |
| गुजरात | 14 | 5 | 7 | 12 | -1.063 |
| पंजाब | 13 | 5 | 8 | 10 | -0.347 |
| मुंबई | 14 | 4 | 10 | 8 | -0.271 |

**स्कोर बोर्ड**

| रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु | रन | गेंद | 4/6 |
|---|---|---|---|
| कोहली कै. मिचेल बो. सैंटनर | 47 | 29 | 3/4 |
| डु प्लेसिस रन आउट सैंटनर | 54 | 39 | 3/3 |
| पाटीदार कै. मिचेल बो.शार्दूल | 41 | 23 | 2/4 |
| कैमरन ग्रीन नाबाद | 38 | 17 | 3/3 |
| कार्तिक कै. धोनी बो. तुषार देशपांडे | 14 | 06 | 1/1 |
| ग्लेन मैक्सवेल कै. धोनी बो शार्दूल | 16 | 05 | 2/1 |
| महिपाल लोमरोर नाबाद | 00 | 01 | 0/0 |

**अतिरिक्त**: 08, **कुल**:20 ओवर में पांच विकेट पर 218 रन, **विकेट पतन**: 1-78, 2-113, 3-184, 4-201, 5-218, **गेंदबाजी**: तुषार देशपांडे 4-0-49-1, शार्दूल ठाकुर 4-0-61-2, महीश थीक्षाना 4-0-25-0, मिचेल सैंटनर 4-0-23-1, रवींद्र जडेजा 3-0-40-0, सिमरजीत सिंह 1-0-19-0,

| चेन्नई सुपर किंग्स | रन | गेंद | 4/6 |
|---|---|---|---|
| ऋतुराज कै. यश दयाल बो. मैक्सवेल | 00 | 01 | 0/0 |
| रचीन रवींद्र रन आउट स्वप्निल सिंह | 61 | 37 | 5/3 |
| डैरेल मिचेल कै. विराट बो. यश दयाल | 04 | 06 | 0/0 |
| रहाणे कै. डु प्लेसिस बो. लॉकी फर्ग्यूसन | 33 | 22 | 3/1 |
| शिवम दुबे कै. फर्ग्यूसन बो. कैमरन ग्रीन | 07 | 15 | 0/0 |
| रवींद्र जडेजा नाबाद | 42 | 22 | 3/3 |
| मिचेल सैंटनर कै. डुप्लेसिस बो. सिराज | 03 | 04 | 0/0 |
| धोनी कै. स्वप्निल बो. यश दयाल | 25 | 13 | 3/1 |
| शार्दुल ठाकुर नाबाद | 01 | 02 | 0/0 |

**अतिरिक्त**: 15, **कुल**: 20 ओवर में सात विकेट पर 191 रन, **विकेट पतन**: 1-0, 2-19, 3-85, 4-115, 5-119, 6-129, 7-190, **गेंदबाजी**: ग्लेन मैक्सवेल 4-0-25-1, मोहम्मद सिराज 4-0-35-1, यश दयाल 4-0-42-2, स्वप्निल सिंह 2-0-13-0, कर्ण शर्मा 1-0-14-0, लॉकी फर्ग्यूसन 3-0-39-1, कैमरन ग्रीन 2-0-18-1,

**बेंगलुरु।** आईपीएल 2024 के शुरुआती आठ मैचों में सात मैच हारने वाली आरसीबी छह लगातार जीत के साथ प्लेऑफ में पहुंच गई है। चेन्नई सुपर किंग्स को आरसीबी ने 27 रनों से हराकर प्लेऑफ में जगह बनाई है। यश दयाल ने शानदार गेंदबाजी करते हुए अंतिम ओवर में धोनी-जडेजा जैसे बल्लेबाज को मात्र सात रन ही बनाने दिए। अंतिम ओवर में प्ले आफ के लिए धोनी की टीम को हार के बावजूद 17 रन की जरूरत थी, लेकिन वे जरूरी रन नहीं बना सके। पहले खेलते हुए आरसीबी ने 5 विकेट पर 218 रन बनाए। प्लेऑफ में पहुंचने के लिए उसे चेन्नई को 200 या उससे अंदर रोकना था। पूरी कोशिश के बाद भी चेन्नई की टीम 7 विकेट पर 191 रन ही बना सकी। इस हार से चेन्नई सुपर किंग्स टेबल में 5वें स्थान पर रही। केकेआर, राजस्थान और हैदराबाद पहले ही प्लेऑफ में अपनी जगह बना चुके हैं। कप्तान डुप्लेसिस की अगुआई में शीर्ष क्रम के शानदार प्रदर्शन से आरसीबी मजबूत स्कोर तक पहुंचने में सफल रही। डुप्लेसिस ने अपनी 54 रनों की पारी में 39 गेंदों का सामना किया और तीन चौके के साथ तीन छक्के भी मारे। उनके अलावा विराट कोहली ने 29 गेंदों पर 47 रन जबकि रजत पाटीदार ने 23 गेंद 41 रनों की पारी खेली। कैमरून ग्रीन, दिनेश कार्तिक और ग्लेन मैक्सवेल ने भी 200 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से रन बनाए। सलामी बल्लेबाज कोहली और डुप्लेसी ने अच्छी शुरूआत कर बिना किसी नुकसान के 31 रन बना लिये थे, तभी बारिश की वजह से 40 मिनट खेल रोकना पड़ा। बारिश के ब्रेक के बाद सीएसके ने स्पिनरों को लगा दिया और गेंद टर्न लेने लगी जिससे बल्लेबाजों को तेजी से रन जुटाने में परेशानी हुई।

### आखिरी ओवर में धोनी रहे फेल, आठ मैचों में सात हार के बाद फार्म में आई विराट की आरसीबी

आठ मैचों में सात हार के बाद विराट की आरसीबी फार्म में आई और प्लेआफ में पहुंची। चेन्नई की शुरुआत बेहद खराब रही और कप्तान रुतुराज गायकवाड़ पारी की पहली गेंद पर ही ग्लेन मैक्सवेल का शिकार हो गए। डेरिल मिचेल भी सिर्फ 4 रन बना सके। 19 रन पर दो विकेट गिरने के बाद रचिन रविंद्र और अजिंक्य रहाणे ने पारी को संभाला। दोनों ने खुलकर शॉट खेले और तीसरे विकेट के लिए 66 रनों की साझेदारी बनाई। रहाणे 22 गेंद पर 33 रन बनाकर फर्ग्युसन का शिकार बने। इसके बाद उतरे शिवम दुबे क्रीज पर जूझ रहे थे। इस बीच रचिन रविंद्र ने फिफ्टी पूरी की। वह खुलकर शॉट खेल रहे थे लेकिन दुबे के साथ तालमेल बिगड़ने की वजह से रन आउट होना पड़ा। अगले ओवर में दुबे खुद भी आउट हो गए।

# इंपैक्ट खिलाड़ी के नियम बकवास: विराट कोहली

### कोहली बोले, इसने खेल का संतुलन बिगाड़ा

**नई दिल्ली।** कप्तान रोहित शर्मा से सहमति जताते हुए स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने इंपैक्ट खिलाड़ी के नियम की आलोचना करते हुए कहा कि इससे खेल का संतुलन बिगड़ रहा है। आईपीएल के पिछले सत्र से पारी के बीच में स्थानापन्न खिलाड़ी को उतारने का नियम शुरू हुआ है जिस पर रोहित ने भी नाराजगी जताई थी। अब कोहली ने जियो सिनेमा से कहा, मैं रोहित का समर्थन करता हूं। मनोरंजन खेल का एक पहलू है लेकिन संतुलन भी होना चाहिए। इससे खेल का संतुलन बिगड़ा है और कई लोगों को ऐसा लगता है, सिर्फ मुझे नहीं। रोहित कहा, मैं इस नियम का मुरीद नहीं हूं। इससे हरफनमौलाओं पर विपरीत असर पड़ेगा। क्रिकेट 11 खिलाड़ियों का खेल है, 12 का नहीं। आईपीएल के इस सत्र में आठ बार 250 रन से अधिक का स्कोर बना और कोहली गेंदबाजों का दर्द समझते हैं। उन्होंने कहा, गेंदबाजों को लग रहा है कि हम क्या करें । मैने कभी ऐसा नहीं देखा जब गेंदबाजों को लगता है कि वे हर गेंद पर चार या छह रन देंगे। हर टीम के पास बुमराह या राशिद खान तो है नहीं हैं। उन्होंने कहा, एक अतिरिक्त बल्लेबाज के कारण पावरप्ले में मैं 200 प्लस के स्ट्राइक रेट से खेल रहा हूं क्योंकि मुझे पता है कि आठवें नंबर पर भी एक बल्लेबाज है।

### बल्ले और गेंद के बीच होना चाहिए संतुलन

मेरा मानना है कि शीर्ष स्तर पर क्रिकेट में इस तरह का दबदबा नहीं होना चाहिये। बल्ले और गेंद के बीच समान संतुलन होना चाहिये। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कहा था कि यह नियम प्रयोग के तौर पर लागू किया गया है ताकि दो भारतीय खिलाड़ियों को एक मैच में मौका मिल सके । कोहली ने कहा, मुझे यकीन है कि जय भाई ने कहा है कि वह इसकी समीक्षा करेंगे और मुझे यकीन है कि ऐसा निष्कर्ष निकलेगा कि खेल में संतुलन पैदा हो सके। सिर्फचौके या छक्के की क्रिकेट में रोमांचक नहीं होते। 160 का स्कोर बनाकर जीतना भी रोमांचक होता है।

### रिकॉर्ड प्रदर्शन के बावजूद पाकिस्तान की हार

# निदा डार टी20 में सबसे अधिक विकेट लेने वाली गेंदबाज बनीं

**नॉर्थम्प्टन।** इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में पाकिस्तान की हार के बावजूद के निदा डार टी20 में सबसे अधिक विकेट लेने वाली गेंदबाज बन गईं हैं। डार ने शुक्रवार को महिला टी20 में अग्रणी विकेट लेने वालों की सूची में शीर्ष पर रही ऑस्ट्रेलिया की मेगन स्कट (136 विकेट) को पीछे छोड़ दिया। वह शीर्ष 10 की सूची में एकमात्र पाकिस्तानी महिला हैं। इससे पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू सीरीज में डार 135 विकेट लेकर स्कट के रिकार्ड की बराबरी के काफी करीब पहुंच चुकी थीं। बर्मिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ पहले मुकाबले में उन्हें कोई विकेट नहीं मिला था, जिसमें पाकिस्तान 53 रनों से हार गया। दूसरे मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए माइया बाउचियर, एलिस कैप्सी और नेट साइवर-ब्रंट के उपयोगी योगदान से इंग्लैंड ने छह विकेट पर 144 रन बनाये।

### एमी जोन्स को आउट कर हासिल किया मील का पत्थर

डार ने 12वें ओवर में कैप्सी का विकेट लेकर स्कट की बराबरी की और फिर आखिरी ओवर में गेंदबाजी करते हुए एमी जोन्स को आउट किया जिससे डार को मील का पत्थर मिला। पाकिस्तान को शुरुआत में ही परेशानी का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्हें साझेदारियाँ बनाने में संघर्ष करना पड़ा।

### मध्य प्रदेश के खेल मॉडल की अधिकारियों ने की प्रशंसा

**भोपाल।** गुजरात खेल विभाग के उच्च स्तरीय दल ने भोपाल स्थित खेल अकादमियों का अवलोकन किया। अकादमी के अनुसार गुजरात से आये 07 सदस्यीय दल में अश्वनी कुमार (आईएस), प्रमुख सचिव, स्पोर्ट्स यूथ एण्ड कल्चर एक्टिविटी विभाग गुजरात, आर.एस. निनामा (आईएस), महानिदेशक, खेल प्राधिकरण गुजरात, डॉ. कपिल कुमार, संचालक, खेल गुजरात यूनिवर्सिटी, समीर पांचाल, जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी अहमदाबाद खेल प्राधिकरण गुजरात, भूमिक कुमार ओझा, जिला प्रशिक्षक, खेल प्राधिकरण गुजरात, प्रियांशु जैन, पीएमयू कंसल्टेन्ट, रामकुमार, आर्किटेक्ट कोलॉज डिजाइन ने शूटिंग अकादमी, घुडसवारी अकादमी, स्पोर्ट्स अकादमी, अपर लेक, वॉटर स्पोर्ट्स अकादमी, लोअर लेक, हाईपरफार्मेन्स सेन्टर का 16 एवं 17 मई के बीच अवलोकन किया।

### अरेरा इंटर हाउस प्रीमियर लीग का शुभारंभ

**भोपाल।** अरेरा इंटर हाउस प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि ध्रुव नारायण सिंह, भोपाल संभाग क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक द्वारा किया गया। इस अवसर पर अविनाश पाठक, शांति जैन, सीएस धाकड़ बीडीसीए पदाधिकारीगण,,वंदे मातरम समिति के अध्यक्ष प्योज जोशी, संस्कार विद्या पीठ स्कूल के संचालक शांतनु शर्मा पूर्व खिलाड़ी मुकेश भटनागर और प्रियदर्शी पाठक, ज्योतिरादित्य सिंह, उमेश तिवारी अंकित ग्रोवर एवं सोनू कुशवाह विशेष रुप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन हेमंत कपूर सचिव और सुरेश चैनानी अध्यक्ष एवं मुख्य प्रशिक्षक द्वारा किया गया। उदघाटन मैच वन्दे मातरम और जयहिंद के मध्य खेला गया। जयहिंद ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 35.3 ओवर्स में सभी विकेट्स खोकर 180 रन बनाए। जवाबी पारी में वन्दे मातरम 45 ओवर्स में सभी विकेट्स खोकर 171 रन बना सकी और मैच 9 रन से हार गई।

# टी20 विश्वकप: 25 मई को न्यूयॉर्क रवाना होंगे कई भारतीय खिलाड़ी

### कप्तान रोहित शर्मा समेत सात खिलाड़ी 25 तो बाकी 27 मई को जाएंगे

**नई दिल्ली।** भारत के अधिकांश क्रिकेटर और सहयोगी स्टाफ टी20 विश्व कप के लिए 25 मई को न्यूयॉर्क रवाना होगा जबकि बाकी 26 मई को आईपीएल फाइनल के बाद जाएंगे। इससे पहले आईपीएल प्लेआफ के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी टीमों के सदस्यों को 21 मई को रवाना होना था लेकिन बाद में योजना में बदलाव हुआ। अब वे 25 मई को रवाना होंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया, रोहित शर्मा, हार्दिक पंड्या, सूर्यकुमार यादव, जसप्रीत बुमराह, ऋषभ पंत, अर्शदीप सिंह, अक्षर पटेल और सहयोगी स्टाफ25 मई को रवाना होगा।

उन्होंने कहा, पहले जत्थे को 21 मई को जाना था लेकिन भारतीय टीम एक मात्र अभ्यास मैच एक जून को बांग्लादेश के खिलाफ खेल रही है तो खिलाड़ियों को घर पर कुछ अतिरिक्त समय मिल जाएगा। आईपीएल फाइनल खेलने वाले खिलाड़ी 27 मई को रवाना होंगे। भारत को पहला मैच पांच जून को आयरलैंड से और नौ जून को पाकिस्तान से खेलना है।

### त्रिकोणीय सीरीज में आरएनटीयू जीता

**भोपाल।** रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय आरएनटीयू द्वारा त्रिकोणीय सीरीज का आयोजन किया जा रहा है। 20 ओवर की निर्धारित त्रिकोणीय सीरीज में आरएनटीयू रायसेन पुलिस और फॉरेस्ट विभाग के मध्य खेला गया है। आरएनटीयू ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। रायसेन पुलिस के बल्लेबाज हेमंत शाक्य में 45 बाल में 70 रन, अंशुल शर्मा ने 24 बॉल पर 21 रन, नरेंद्र ने 22 बाल पर 23 रन की बदौलत 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 144 रन का टारगेट दिया। आरएनटीयू के गेंदबाज राहुल शिंदे ने 4 ओवर में 20 रन देकर 2 विकेट और शिवांश शर्मा ने 4 ओवर में 2 रन देकर 2 विकेट झटके। लक्ष्य का पीछा करने आरएनटीयू की टीम ने 19.5 ओवर में 6 विकेट खोकर कर आसानी से 145 रन बनाकर जीत हासिल की। आरएनटीयू के बल्लेबाज मानिक संजय ने 18 गेंद पर 38 रन, शिवांश शर्मा ने 38 गेंद पर 41 रन और वीरेंद्र मीणा ने 11 गेंद पर 16 रन बनाए। आरएनटीयू के शिवांश शर्मा को दोहरे प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया।

# ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर शीर्ष स्थान पर

### निशानेबाजी: अकादमी की आषी चौकसे तीसरे स्थान पर रहीं

**भोपाल।** ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल का आयोजन पेरिस में 26 जुलाई से 11 अगस्त 2024 के मध्य होना है। इसके लिए ओलम्पिक गेम्स पेरिस के सिलेक्शन ट्रायल का आयोजन भोपाल स्थित मप्र राज्य शूटिंग अकादमी में किया जा रहा है। मध्य प्रदेश राज्य खेल अकादमी के 2 खिलाड़ी एष्वर्य प्रताप सिंह तोमर और आषी चौकसे इस सिलेक्शन ट्रायल में क्रमशः पहले और तीसरे स्थान पर रहे। 50 मी. 3 पोजीशन इवेन्ट में मप्र राज्य शूटिंग अकादमी के खिलाड़ी एष्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने चार चरणों के सिलेक्शन ट्रायल में शानदार निशाने लगाकर शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। अकादमी की खिलाड़ी आषी चौकसे महिला वर्ग 50 मी. 3 पोजीशन रायफल इवेंट में तीसरे स्थान पर रही। वहीं स्वप्निल, रेल्वे द्वितीय तथा अखिल रेल्वे तृतीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग में अंजुल मुदगल, पंजाब प्रथम, स्विफ्ट कौर सामरा, पंजाब द्वितीय व आशी चौकसे मध्य प्रदेश तृतीय स्थान पर रहीं। एष्वर्य प्रताप सिंह तोमर, ग्राम रतनपुर जिला खरगौन के निवासी है। एष्वर्य के पिता किसान हैं। एष्वर्य और आशी मुख्य प्रशिक्षक जयदीप कर्माकर, सहायक प्रशिक्षक वैभव शर्मा और अपराजिता सिंह के मार्गदर्शन में मप्र राज्य खेल अकादमी में प्रशिक्षणरत हैं।

### आकाश व पोयमंती की जोड़ी ने जीता डब्ल्यूटीटी खिताब

**नेवसेहिर तुर्किये।** भारत के टीटी खिलाड़ी आकाश पाल और पोयमंती बैस्या ने तुर्किये के नेवसेहिर में डब्ल्यूटीटी फीडर कप्पाडोसिया 2024 में मिश्रित युगल का खिताब जीता। भारतीय जोड़ी ने फाइनल में हमवतन अनिर्बान घोष और स्वास्तिका घोष को रोमांचक मुकाबले में 3-2 (12-10, 3-11, 8-11, 11-8, 12-10) के स्कोर से हराया। इससे पहले सेमीफाइनल में पाल और बैस्या ने यूक्रेन के एंड्री ग्रेबेनियुक और दिमित्रेंको को 3-0 (11-8, 11-4, 11-6) से हराया था। गौरतलब है कि पाल और बैस्या का यह दूसरा डब्ल्यूटीटी खिताब था। भारतीय टेबल टेनिस जोड़ी ने मार्च में बेरूत में मिश्रित युगल का खिताब जीतकर अपने सीनियर हमवतन साथियान गणानाशेखरन और मनिका बत्रा को चौंका दिया था। इसके अलावा दुनिया की 338वें नंबर की खिलाड़ी क्रित्विका रॉय को सेमीफाइनल में जापान की दुनिया की 85वें नंबर की सत्सुकी ओडो से 3-0 (11-2, 11-6, 11-4) से हार मिली। रॉय ने राउंड ऑफ 16 में चीनी ताइपे के 55वीं रैंकिंग वाले एलआई यू-झुन को हराया था।

### मनिका बत्रा को मिली क्वार्टरफाइनल में हार

पेरिस ओलंपिक के लिए भारतीय टेबल टेनिस टीम में चुनी गई मनिका बत्रा को क्वार्टरफाइनल में जापान की हितोमी सातो से 3-1 (11-5, 11-4, 11-5, 13-11) से हार मिली जबकि महिला युगल में, पोयमंती बैस्या और क्रित्विका रॉय फाइनल में जापान की होनोका हाशिमोटो और हितोमी सातो के खिलाफ 3-0 (11-1, 11-3, 11-8) से हार गईं। सेमीफाइनल में पाल और बैस्या ने जर्मनी की फ्रांजिस्का श्राइनर और भारत की यशस्विनी घोरपड़े को 3-0 (11-7, 11-1, 14-12) से हराया था। पुरुष एकल में, राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत देसाई को राउंड ऑफ 16 में युता तनाका से 3-1 (11-8, 7-11, 11-6, 11-8) से हार मिली। हरमीत देसाई पुरुष एकल और टीम स्पर्धा में पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

# ऐश्वर्या, कियारा और उर्वशी ने ढाया कहर

## कान्स फिल्म फेस्टिवल

**पेरिस।** 77वें कान्स फिल्म फेस्टिवल में ऐशवर्या राय बच्चन अपना जादू चला रही हैं। दूसरे दिन उन्होंने अपने स्टाइलिश लुक से सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। ऐश्वर्या राय ने चल रहे कांस फिल्म फेस्टिवल में अपने पहले दिन के लुक से खूब लाइमलाइट बटोरीं तो वहीं अब एक्ट्रेस के दूसरे दिन का लुक भी चर्चा में बना हुआ है। अपनी खूबसूरती ही नहीं बल्कि फैशन सेंस के लिए भी दुनियाभर में मशहूर ऐश्वर्या राय ने कांस के दूसरे दिन बहुत ही यूनिक गाउन पहना हुआ था। पिछले 22 साल से कांस फिल्म फेस्टिवल में अपने स्टाइल और डिफरेंट आउटफिट से लोगों का दिल जीतने वाली भारतीय अभिनेत्री ऐश्वर्या राय का दूसरे दिन का लुक सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह एकदम नए लुक में नजर आ रही हैं। ऐश्वर्या ने कांस के सेकंड डे अपीयरेंस में सिल्वर और ब्लू कलर का गाउन पहना था, जिसमें वह बला की खूबसूरत दिख रही हैं।

### रौतेला पिंक गाउन में दिखीं सुपर स्टाइलिश

इन-दिनों उर्वशी रौतेला कान्स फिल्म फेस्टिवल 2024 के लिए फ्रेंच रिवेरा में हैं। एक्ट्रेस ने रेड कार्पेट पर वॉक किया। पिंक गाउन में वह बेहद ग्लैमरस लग रही हैं। उर्वशी रौतेला ने कान्स फिल्म फेस्टिवल 2024 में खालिद एंड मारवान लेबल की ओर से डिजाइन किए गए गुलाबी गाउन में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज की। गाउन के चारो ओर फेदर लगे हुए थे, वहीं उन्होंने माथे पर हेयरबैंड लगाया हुआ था।

### यूनिक गाउन से खींचा ध्यान

पहले दिन मोनोक्रोमैटिक गाउन से सभी का ध्यान अपनी ओर खींचने वाली ऐश्वर्या राय ने कांस के दूसरे दिन अपने सिल्वर और ब्लू कलर के यूनिक गाउन में अपनी अदाओं से एक बार फिर महफिल लूट ली। एक हाथ में चोट लगे होने के बावजूद ऐश्वर्या राय बच्चन ने रेड कार्पेट पर अपने लुक्स से सभी को दीवाना बना दिया।

### आन्या टेलर जॉय-क्रिस हेम्सवर्थ ने रेड कार्पेट पर बिखेरा जलवा

फ्रांस में आयोजित 77वें कान फिल्म फेस्टिवल खूब सुर्खियों में छाया हुआ है। पूरी दुनिया के सिने प्रेमियों को कान फिल्म फेस्टिवल का बेसब्री से इंतजार रहता है। 14 मई को बड़ी धूमधाम और ग्लैमर के साथ कान फिल्म फेस्टिवल का उद्घाटन हुआ। इस दौरान हॉलीवुड के कई कलाकार 'फ्यूरियोसाः ए मैड मैक्स सागा' के प्रीमियर के लिए इकट्ठा हुए। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने वाले सितारों में आन्या टेलर जॉय और क्रिस हेम्सवर्थ की जोड़ी भी दिखाई दी। जॉर्ज मिलर के निर्देशन में बनी यह फिल्म 2015 की मैड मैक्स फ्रेंचाइजी की पांचवीं फिल्म फ्यूरियोसा 2015 की ऑस्कर विजेता हिट 'मैड मैक्सः फ्यूरी रोड' पर आधारित है। पिछली फिल्म में इम्पीरेटर फ्यूरियोसा के रूप में चार्लीज थेरॉन ने मुख्य भूमिका निभाई थी। नई फिल्म फ्यूरियोसा यानी आन्या टेलर जॉय पर केंद्रित है, जिसे उनके बचपन में वारलॉर्ड डिमेंटस यानी क्रिस हेम्सवर्थ द्वारा अपहरण कर लिया गया था और वे कई माताओं के ग्रीन प्लेस में अपने घर वापस जाने का रास्ता खोजने के लिए खुद को तैयार करती हैं।

## तारक मेहता के 'रोशन सिंह सोढ़ी' 25 दिन बाद घर वापस लौटे...

**मुंबई।** लोकप्रिय टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में रोशन सिंह सोढ़ी की भूमिका निभाने के लिए प्रसिद्ध गुरुचरण सिंह, जो 22 अप्रैल से लापता थे। शुक्रवार को घर लौट आए हैं। कई दिनों तक गायब रहने के बाद

अभिनेता खुद ही वापस घर लौट आए हैं। परिवार वालों ने दिल्ली में उनकी गुमशुदगी की एफआईआर दर्ज करवाई थी। वापस लौटने पर सोढ़ी से पुलिस ने पूछताछ की। दिल्ली पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज किया था और अभिनेता की तलाश के लिए जांच चल रही थी। पुलिस के मुताबिक गुरुचरण ने पूछताछ के दौरान अधिकारियों को बताया कि वह अपना सांसारिक जीवन छोड़ चुके हैं और धार्मिक यात्रा पर हैं। पुलिस ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में वह अमृतसर और लुधियाना जैसे कई शहरों में गुरुद्वारों में रुके थे, लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि उसे घर लौट जाना चाहिए। 22 अप्रैल को अभिनेता को दिल्ली से मुंबई के लिए फ्लाइट पकड़नी थी। हालांकि, वह फ्लाइट में नहीं चढ़े और लापता हो गए। उनका फोन नंबर 24 अप्रैल तक सक्रिय था, जिसके जरिए कई लेनदेन किए गए थे, जैसा कि पुलिस जांच से पता चला है।

## गजगामिनी चाल देख फैंस हुए दीवाने...

**मुंबई।** संजय लीला भंसाली की पहली वेब सीरीज हीरामंडीः द डायमंड बाजार में अदिति राव की एक्टिंग का हर कोई दीवाना हो गया है। सीरीज में अदिति के रोल को बेहद पसंद किया गया। अब उनके रोल से भी ज्यादा वायरल हो रही है उनकी गजगामिनी चाल। एक्ट्रेस ने वायरल हो रही अपनी वीडियो क्लिप पर रिएक्ट किया है। खास बातचीत में अदिति राव हैदरी ने बताया कि उन्हें नहीं पता था कि इस चाल को क्या कहते हैं क्योंकि भरतनाट्यम डांसर के रूप में उन्होंने ऐसा कभी कुछ नहीं सीखा था। उन्होंने बताया कि इस वॉक को संजय लीला भंसाली ने उनसे करने को कहा था। अदिति ने कहा, "वो किसी से पूछना चाहती हैं, संजय सर, मेरे डांस टीचर कि ये क्या है। क्या ये

गजगामिनी चाल या स्वान वॉक है। यह कौन सी वॉक है जो मुझे नहीं पता है।" उन्होंने आगे कहा कि मैं सिर्फ इतना कहूंगी कि मैनें वही किया जो संजय सर ने मुझे करने के लिए कहा। मैनें संजय सर को फॉलो किया। उन्होंने मुझे जो बताया मैनें वही किया। उन्होंने कहा कि मुझे पता है कि कथक में मयूर चाल (मोर चाल) है, फिर गजगामिनी (मोह की चाल) है, मुझे यकीन है कि यह सभी नृत्य रूपों में है, लेकिन मुझे नहीं पता, मुझे इसका पता लगाना चाहिए।

## करियर की खातिर इन अभिनेत्रियों ने छुपाई पहचान नाम बदलकर फैंस के दिलों पर कर रहीं राज

***मुंबई।** टीवी अभिनेत्रियों के चाहने वाले बॉलीवुड अभिनेत्रियों से कम नहीं हैं। टीवी हसीनाओं के भी लाखों में फैंस हैं, जिन्हें उनके बारे में हर बात जानने की खूब दिलचस्पी रहती है। सोशल मीडिया पर इन अभिनेत्रियों की तस्वीरें आते ही छा जाती हैं। मगर इन अभिनेत्रियों को ये पहचान यूं ही हासिल नहीं हुई है। इसके लिए इन्होंने कड़ी मेहनत की है। तब जाकर ये मुकाम हासिल हुआ है। वहीं, कई अभिनेत्रियों ने तो करियर की खातिर अपना नाम तक बदल दिया है। आज हम इस लेख में उन्हीं अभिनेत्रियों के बारे में बात करेंगे, जिन्होंने अपने अभिनय करियर के लिए नाम बदल लिया। तो चलिए जानते हैं...*

**अंकिता लोखंडे :** टीवी की लोकप्रिय

अभिनेत्रियों में से एक अंकिता लोखंडे का नाम भी इस लिस्ट में शामिल हैं। अंकिता अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ साथ पर्सनल लाइफ को लेकर भी सुर्खियों में बनी रहती हैं। टीवी शो 'पवित्र रिश्ता' से अंकिता को पहचान मिली थी। मगर उनके बारे में ये बहुत कम लोग जानते होंगे कि उनका नाम पहले तनुजा लोखंडे था। उन्होंने बाद में अपना नाम अंकिता रखा।

**रश्मि देसाई :** टीवी अभिनेत्री और बिग बॉस 13 फेम रश्मि देसाई का नाम भी इस लिस्ट में शामिल हैं। अभिनेत्री दो बार अपना नाम बदल चुकी हैं। बचपन में उनका नाम शिवानी था, जिसे बदलकर बाद में उनकी मम्मी ने दिव्या नाम रख दिया था। मगर पर्दे पर अपनी पहचान बनाने के लिए अभिनेत्री ने अपना फिर से नाम बदल दिया और रश्मि देसाई रख लिया।

**दलजीत कौर :** टीवी अभिनेत्री दलजीत कौर

का नाम भी इसमें शामिल हैं। वह भी अपना नाम बदल चुकी हैं। दलजीत कौर का नाम पहले दीपा कौर था। अभिनय करियर की शुरुआत से दलजीत ने अपना नाम बदलकर दलजीत कौर रख लिया था। अभिनेत्री को सीरियल 'इस प्यार को क्या नाम दूं' से पहचान मिली थी।

**अनिता हसनंदानी :** अनिता हसनंदानी का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है। अनिता किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने कई बड़े सीरियल में अपने अभिनय का दमखम दिखाया है। वह कई बॉलीवुड फिल्मों में भी बतौर लीड एक्ट्रेस काम कर चुकी हैं। जब

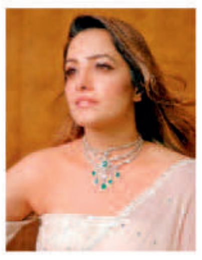

उन्होंने अभिनय करियर की शुरुआत की तब उनका नाम नताशा हसनंदानी था, जिसे बदलकर बाद में उन्होंने अनिता हसनंदानी कर लिया था।

**निया शर्मा :** टीवी की सबसे बोल्ड अभिनेत्रियों में से एक निया शर्मा का नाम भी इसमें शामिल है।

निया का नाम इंडस्ट्री में आने से पहले निशा शर्मा था। उन्होंने अपने अभिनय करियर की शुरुआत करने से पहले अपना नाम निशा से बदलकर निया शर्मा रख लिया था। निया सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। वह फैंस के साथ अक्सर अपनी बोल्ड तस्वीरें साझा करती रहती हैं।

# टीचिंग का एआई अवतार रोबोटीचर आइरिस

**कवर स्टोरी**
**दिव्यज्योति 'नंदन'**

एक ऐसे देश में जहां साल 2021-22 की एक रिपोर्ट के मुताबिक 95,07,123 टीचर थे और अगर इस रिपोर्ट में दूरदराज के निजी स्कूल टीचरों को भी जोड़ लिया जाए तो इनकी संख्या एक करोड़ से काफी ऊपर पहुंचती है। उस देश की समूची टीचर बिरादरी की नींद, केरल की एक टीचर ने उड़ा दी है। ऐसा हो भी क्यों न? क्योंकि यह कोई सामान्य टीचर नहीं है। केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम के एक हायर सेकेंडरी स्कूल में पिछले महीने टीचिंग जॉब के लिए देश की पहली एआई रोबोट टीचर नियुक्त की गई। इसका नाम आइरिस है और इसे मेकरलैब्स एडूटेक की मदद से बनाया गया है। यह भारत की पहली जनरेटिव आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस टीचर है यानी आइरिस एक ह्यूमनाइड रोबोट है।

### अनेक सब्जेक्ट्स में एक्सपर्ट

रोबोट होने के बाद भी दिखने में आइरिस बिल्कुल सामान्य केरलाइट महिला जैसी लगती है। लगभग 48 किलो वजन वाली 5 फीट 7 इंच की आइरिस फर्राटे से हिंदी, अंग्रेजी और मलयालम भाषाएं बोलती है। यह एक ऐसी स्कूल टीचर है, जो कला से लेकर कृषि तक और विज्ञान से लेकर संस्कृत तक न सिर्फ आसानी से पढ़ाती है बल्कि छात्रों के सवालों का उत्तर बिल्कुल सहजता से देती है। आप इस टीचर से किसी एक विषय का नहीं, किसी भी विषय का प्रश्न कर सकते हैं, यह लगभग सभी सवालों का जवाब दे देगी बशर्ते क्लास में शोरगुल न हो। केरल की महिलाओं की तरह गहरे रंगों की पारंपरिक साड़ी पहनने वाली आइरिस को शोर-शराबे से चिढ़ है। शोर-शराबा होते ही उसका मूड उखड़ने लगता है और सवालों का जवाब देने की बजाय वह मौन होने लगती है।

### रियल टीचर्स में बढ़ी चिंता

आइरिस भले स्कूल बच्चों के बीच बेहद प्यारी मैम हो, लेकिन केरल के करीब पौने दो लाख और देशभर के लाखों टीचरों की इसने नींद उड़ा दी है। अगर सब इससे खफा या परेशान नहीं हैं तो भी शिक्षक बिरादरी में आइरिस को एक विलेन की तरह देखा जा रहा है। ऐसा हो भी क्यों न! भारत में जहां पढ़े-लिखे लाखों नौजवान बेरोजगार हों, जहां देशभर में करीब 20 लाख प्राथमिक अध्यापकों की कमी हो और उन्हें इसलिए न भर्ती किया जाना संभव हो रहा हो कि राज्य सरकारों को उन्हें वेतन देने के लिए पर्याप्त फंड की कमी हो, उस देश में 20 से 25 लाख की इस रोबोट टीचर का शिक्षक बिरादरी के बीच विलेन बन जाना स्वाभाविक है।

### कई मायने में बेहतर

आइरिस भले रोबोट टीचर हो, लेकिन अब तक के अनुभव से साफ है कि उसके पास बच्चों के 99.99 फीसदी सवालों का सही और सटीक जवाब है। वह बिल्कुल सही समय पर पढ़ाने के लिए कक्षा में प्रवेश करती है और बिल्कुल सही समय पर अपना पाठ खत्म करके दूसरी क्लास की तरफ बढ़ जाती है। फालतू की बातें, किसी से ईर्ष्या नहीं, किसी को विशेष और किसी को गैर विशेष समझने की कोई आदत नहीं। सबसे बड़ी बात यह है कि आइरिस जरा भी वक्त जाया नहीं करती। भला ऐसी टीचर किसे पसंद नहीं होगी।

### कुछ को पसंद-कुछ को नापसंद

पिछले करीब एक दशक से पूरी दुनिया में आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस को लेकर जो नैतिक और सामाजिक बहस छिड़ी हुई है, क्या आइरिस ने उस बहस को और नजदीक से हवा दे दी है? लगता तो ऐसा ही है। आइरिस के अपने काम पर नियुक्त होने के एक दिन बाद ही सोशल मीडिया में ऐसे ह्यूमनाइड रोबोट टीचरों के विरोध में लाखों पोस्ट का तूफान आ गया, जिससे यह पता चलता है कि पहले से ही बेरोजगारी के चक्रव्यूह में फंसे देश में एआई कितना बड़ा संकट है। लेकिन पूरी तरह से सभी लोग उसका विरोध भी नहीं कर रहे। एक बड़ी संख्या है, ऐसे लोगों की जो आइरिस के पक्ष में हैं। एक नजरिए से देखें तो यह स्कूल मैनेजमेंट के लिए भी अनुकूल है। क्योंकि महज 20 से 21 लाख में बनने वाली और करीब 500 से 1000 रुपए मासिक के बीच की मेंटेनेंस का खर्च कराने वाली यह अध्यापिका स्कूल मैनेजमेंट के लिए फायदे का सौदा है। आमतौर पर प्राइवेट या मान्यता प्राप्त स्कूलों में टीचर्स को 50 से 60 हजार रुपए की मासिक सैलरी मिलती है और करीब-करीब हर विषय के टीचर रखने पड़ते हैं। इसलिए एक तरफ जहां ये रोबोट टीचर, स्कूल मैनेजमेंट के लिए फायदे का सौदा हैं, वहीं छात्रों और अभिभावकों के लिए भी ये स्वीकार्य हैं। क्योंकि एक बार बड़े पैमाने पर रोबोट टीचर आ जाएं तो जहां शिक्षा के बजट में भारी कटौती संभव है, वहीं करीब-करीब सभी विषयों की भरपूर जानकारी रखने वाले ये टीचर छात्रों के लिए भी ज्यादा मुफीद साबित होंगे।

आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि ऐसे रोबोटीचर्स की तादाद बढ़ती है या इंसानी टीचर्स के विरोध के चलते ये रोबोटीचर्स सीमित ही रह जाते हैं। *

### कई देशों में एक्टिव रोबोटीचर्स

**हालांकि न** तो देश में न ही दुनिया में आइरिस कोई पहली ह्यूमनाइड रोबोट टीचर है। इस समय यूरोप से लेकर अमेरिका तक 2 लाख से ज्यादा ऐसे ह्यूमनाइड रोबोट टीचर मौजूद हैं, जो छोटे बच्चों के स्कूलों से लेकर यूनिवर्सिटीज तक में पढ़ा रहे हैं। हालांकि मौलिक रूप से ये रोबोटिक टीचर इस कदर आकर्षित करने वाले नहीं हैं कि हर कोई उनके विकल्प के बारे में सोचें। लेकिन यह उस देश में जहां 90 फीसदी टीचर पढ़ाने में बहुत अच्छे और इनोवेटिव न माने जाते हों, जहां बड़ी संख्या में सरकारी टीचर रुचि न लेते हों और बड़े पैमाने पर अपने पढ़ाए जाने वाले विषयों में पर्याप्त समझ और जानकारी न रखने वाले टीचर, आइरिस जैसी स्मार्ट-एक्सपर्ट टीचर से भय तो खाएंगे ही।

# आशुतोष हत्याकांड : पुलिस अभिरक्षा से फरार मुख्य आरोपी को पुनः महाराष्ट्र से पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रखर शाहगंज जौनपुर। पुलिस ने पत्रकार आशुतोष श्रीवास्तव हत्याकांड के मुख्य आरोपी जमीरुद्दीन कुरैशी को पुनः गिरफ्तार कर लिया है। इस बार जमीरुद्दीन को मुंबई (महाराष्ट्र) के ठाणे जिले के बोरीवली थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। जमीरुद्दीन को पहले भी गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वो दो दिन पहले पुलिस कस्टडी से मध्य प्रदेश के खंडवा स्टेशन से फरार हो गया था। जमीरुद्दीन की गिरफ्तारी के बाद शाहगंज पुलिस ने राहत की सांस ली है। सीओ शाहगंज अजीत सिंह चौहान ने बताया कि आशुतोष श्रीवास्तव की हत्या को लेकर दर्ज मुकदमे में नामजद आरोपी जमीरुद्दीन पुत्र स्व. हनीफ कुरैशी निवासी सबरहद को ठाणे से बीते 14 तारीख को गिरफ्तार किया गया था। जब शाहगंज पुलिस उसे ट्रांजिट रिमांड पर लेकर ट्रेन से शाहगंज आ रही थी तो 16 तारीख को मध्य प्रदेश के खंडवा रेलवे स्टेशन पर टायलेट ले जाते समय वो ट्रेन से कूदकर फरार हो गया था। जमीरुद्दीन के फरार होने से

जौनपुर पुलिस की खासी किरकिरी हो रही थी। उसकी गिरफ्तारी के लिए एसपी डॉ. अजय पाल शर्मा ने कई टीमों को तैनात किया था। जौनपुर पुलिस ने रविवार सुबह जमीरूद्दीन को थाना पड़घा स्थित बोरीवली से गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई। फिलहाल पुलिस से बचने के लिए फरार हुए आरोपी ने अपना चेहरा और पहनावा बदल कर पुलिस को गुमराह करने की नाकाम कोशिश की। पुलिस पुनः ट्रांजिट रिमांड पर लेकर जौनपुर लाने की कार्रवाई की जा रही है। बताते चलें कि पत्रकार व आरटीआई एक्टिविस्ट आशुतोष श्रीवास्तव की बीते 13 तारीख को सुबह साढ़े 9 बजे नकाबपोश बाइक सवार हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। आशुतोष के भाई संतोष की तहरीर पर पुलिस ने जमीरुद्दीन कुरैशी, कारोबारी नासिर जमाल, उनके भाई अर्फी उर्फ कामरान, जेल में बंद मो. हाशिम और पांच अज्ञात के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था।

## बनारस को बनायेंगे देश में सर्वाधिक मतदान वाला क्षेत्र : अनूप शुक्ला

प्रखर वाराणसी। प्रतिनिधि उद्योग व्यापार मंडल उप्र द्वारा आज व्यापार महाकुंभ 2024 वाराणसी का आयोजन गोलघर स्थित पराड़कर स्मृति भवन के सभागार में संपन्न हुआ। व्यापारी महाकुंभ वाराणसी में राष्ट्रीय अध्यक्ष अनूप शुक्ला का अंगवस्त्र, विशाल माला, प्रतीक चिन्ह आदि से प्रदेश के विभिन्न जनपदो से आये व्यापारी नेताओ, एवं व्यापारीयों ने जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर अनूप शुक्ला ने कहा कि मतदान हमारा अधिकार है, संगठन मतदान को ले कर पूरे प्रदेश में जागरूकता अभियान चला रहा है रहा है, इसी कड़ी में नों बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसीं कों देश का सर्वाधिक मतदान वाला क्षेत्र बनाने के लिए लोगो को जागरुक किया जा रहा है। इस मौके पर व्यापारी नेता बखरूद्दीन अहमद ने कहा कि व्यापारियों की प्रमुख माँगे है जिसको सरकार को गम्भीरता से लेना होगा।व्यापारी सुरक्षा आयोग का गठन, ऑन लाइन स्वीपिंग से प्रतिस्पर्धा हेतु पैकेज, मंडी शुल्क की समाप्ति, व्यापारी बीमा दो गुना, जी एस टी दो स्लैब में लाना, सिंगल विंडो सिस्टम, एफ डी आई के लिए नये कानून जिससे लघु मध्यम उद्योग को गति मिल सके, अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न बंद हो, छोटे मध्यम व्यापारी को आय कर में छूट

आदि माँगो को पूर्ण कराने हेतु संगठन व्यापारी महाकुंभ आयोजित कर रहा है। आशा है सरकार व्यापारियों के हितों में निर्णय ले कर उनके हितों को सुरक्षित करेगी। समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता बदरुद्दीन अहमद राष्ट्रीय महासचिव एवं संचालन राजेश केसरी नगर अध्यक्ष ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से किशन जायसवाल प्रदेश उपाध्यक्ष, सुनील शुक्ला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, ब्रज किशोर यादव युवा प्रदेश अध्यक्ष, आनंद पांडे ज़िलाध्यक्ष, मनीषा जैन प्रदेश महासचिव, आशुतोष दुबे, टाजेश उपाध्याय युवा प्रदेश उपाध्यक्ष, रश्मि जायसवाल नगर अध्यक्ष, माणिक चन्द्र युवा ज़िलाध्यक्ष, जय प्रकाश जायसवाल लालू युवा नगर अध्यक्ष, विनोद शर्मा ज़िलाप्रभारी, सुनील मिश्रा मीडिया प्रभारी, महेश माहेश्वरी, साजिद हसन संरक्षक, राणा केशरवानी प्रदेश सचिव, इरफान खान पूर्व युवा अध्यक्ष, सोनू केसरी, कृतेश आदि सहित सैकड़ों व्यापारीगण उपस्थित रहे।

## पंकज यादव बने सपा लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव, जौनपुर में युवाओं ने जताई प्रसन्नता, पंकज बोले-ईमानदारी से करूंगा काम

जौनपुर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक यादव ने करंजाकला ब्लॉक हरबसपुर गांव के निवासी पंकज यादव को सपा के प्रति उनकी निष्ठा और पार्टी व जन हित में किए जा रहे कार्यों को देखते हुए समाजवादी लोहिया वाहिनी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राष्ट्रीय सचिव नामित किया है। उन्होंने पार्टी हित में काम करने और दायित्वों के निर्वहन की जिम्मेदारी दी है। पंकज यादव ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से छात्र राजनीत की शुरूआत उसी दौरान छात्र आंदोलन में कई बार जेल भी गए। नवनियुक्त राष्ट्रीय सचिव पंकज यादव ने कहा हम अपने

नेता के बताए हुए मार्ग पर चलकर पार्टी को मजबूत करने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि सभी से आशीर्वाद की अपेक्षा रखता हूं। साथ में पूरी ईमानदारी, कर्मठता से पार्टी हित और लाभ में कार्य करने का काम करुंगा। और उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में भाजपा के शासन में किसान, मजदूर, व्यापारी, छात्र आदि सभी वर्गों के लोग दुखी है। महंगाई दिनों दिन बढ़ती जा रही है। महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं। प्रदेश में अपराधों का ग्राफ भी बढ़ गया है। लिहाजा, अब भाजपा की विफलताओं और सपा की जन कल्याणकारी नीतियों से जनता को अवगत कराने का काम करेंगे। जल्द ही जिले में पार्टी को मजबूत करने की दिशा में काम करेंगे। बता दें, जौनपुर के करंजाकला ब्लॉक हरबसपुर गांव निवासी पंकज यादव ने काफी लम्बे समय से पार्टी के लिए काम किया है। साथ ही जमीनी स्तर पर युवाओं के बीच भी रहने का काम किया है। अपने इलाके में जरूरतमंदों के मददगार माने जाते हैं।

## मतदान हर नागरिक का पहला कर्तव्य : ज्योति प्रकाश

प्रखर वाराणसी। मुख्य विकास अधिकारी हिमांशु नागपाल के निर्देश के अनुपालन में चोलापुर ब्लाक के बूथ संख्या 216 एवं 217 के सुपरवाइजर तथा राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के कार्यकारी जिला अध्यक्ष ज्योति प्रकाश के नेतृत्व में विमल भारती इंटर कॉलेज कटारी से मतदाता जागरूकता अभियान रैली का आयोजन किया गया जिसमें ज्योति प्रकाश के साथ विमल भारती इंटर कॉलेज के शिक्षक ग्राम सभा के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति जनप्रतिनिधि तथा बच्चों के अभिभावक आदि लोग शामिल रहे। रैली में मतदाताओं को मतदान करने हेतु प्रेरित करने के लिए विभिन्न नारों आदि का उद्घोष किया गया। जगह-जगह नुक्कड़ सभाएं करके लोगों को अधिक से अधिक मतदान करने हेतु प्रोत्साहित किया गया । इस अवसर पर ज्योति प्रकाश ने कहा

कि मतदान हर नागरिक का प्रथम कर्तव्य है और यह सबसे जरूरी कार्यों में है अतः सबसे पहले मतदान करें उसके बाद कोई दूसरा कार्य करें। मतदाता का एक मत राष्ट्र के निर्माण में उसके द्वारा रखे गए ईट के समान है। न सिर्फ खुद मतदान करें बल्कि अपने पास पड़ोस के सभी मतदाताओं को मतदान के लिए जरूर लेकर जाए। मतदाता जागरूकता अभियान के क्रम में खंड शिक्षा अधिकारी चोलापुर बृजेश कुमार राय के मार्गदर्शन में प्राथमिक विद्यालय बेला से जागरूकता रैली निकाली गई तथा ग्राम सभा के मतदाताओं को शत प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी के साथ राष्ट्रीय शिक्षक महासंघ के कार्यकारी जिला अध्यक्ष ज्योति प्रकाश तथा विद्यालय के शिक्षक गांव के गढ़मन व्यक्ति जनप्रतिनिधि तथा अभिभावक गण उपस्थित रहे।

## सामूहिक वृक्षारोपण एवं मतदाता जन जागरूकता अभियान किया आयोजित

प्रखर वाराणसी। 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल एवं डालिम्स सनबीम वर्ल्ड स्कूल पहाड़िया को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहयोग से एक सामूहिक वृक्षारोपण एवं मतदाता जन जागरूकता अभियान आयोजित करने का विशिष्ट सम्मान मिला। यह पहल सिर्फ पेड़ लगाने से बढ़कर थी; यह एक हरित भविष्य की दिशा में एक कदम था और पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण था। इस मौके पर वहां पर उपस्थित स्कूल के शिक्षक एवं विद्यार्थी अधिकारी कर्मचारी को मत देने के महत्व के बारे में बताया गया मतदान करने के लिए जागरूक भी किया गया, हमारे उत्साही छात्र और समर्पित स्टाफ सदस्य, समन्वयक और प्रिंसिपल पूनम श्रीवास्तव सहित, CRPF के कर्मियों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए। हमारे युवा मनों को इस तरह के अर्थपूर्ण कार्य में संलग्न देखना वास्तव में दिल को छू लेने वाला और प्रेरणादायक था। इस कार्यक्रम ने न केवल

पारिस्थितिक संरक्षण के महत्व को रेखांकित किया, बल्कि इसमें शामिल सभी लोगों में जिम्मेदारी और टीम वर्क की भावना को भी बढ़ावा दिया। CRPF कमांडेंट श्री अनिल कुमार बृक्ष और उनकी टीम को उनके अमूल्य समर्थन और मार्गदर्शन के लिए हार्दिक धन्यवाद। इस सहयोग ने हमारे छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध किया है, उनमें सामुदायिक सेवा और पर्यावरण की देखभाल के मूल्यों को स्थापित किया है।

इस कार्यक्रम की शोभा श्री अनिल सिंह श्री अनिल सिंह गंगा हरीतिमा एवं मतदाता जागरुकता के ब्रांड एंबेसडर तथा डिंपल राय ब्रांड एंबेसडर सनबीम स्कूल ने बढ़ाया। इस कार्यक्रम में 95 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के आलोक कुमार द्वितीय कमान अधिकारी, नवनीत कुमार एवं उमाकांत ओझा उप कमांडेंट, विनोद कुमार सहायक कमांडेंट निरीक्षक राजीव कुमार एवं प्रवीण सिंह के साथ तमाम जवानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

## सिधौना का धनुषयज्ञ देख मंत्रमुग्ध हुए सेनाधिकारी

प्रखर गाजीपुर। सिधौना गांव की रामलीला टीम महाराष्ट्र राज्य के पुणे में सेनाधिकारियों से समक्ष धनुषयज्ञ की लीला मंचन किया। थलसेना के छावनी स्थित चरक ऑडिटोरियम में शनिवार की शाम सिधौना गांव के दो दर्जन कलाकारों से अपने जीवंत अभिनय से सेना प्रमुख सहित सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कृष्णानंद सिंह के नेतृत्व में लीला टीम भगवान श्रीराम के आदर्श एवं मानवीय मूल्यों के प्रसार प्रचार के लिए उत्तरप्रदेश सहित देश के अन्य स्थलों पर रामलीला का मंचन करती है। काशी रंगमंच कला परिषद के सभी कलाकारों की शानदार अदायगी और भव्य दिव्य मंचन से प्रसन्न होकर सेना प्रमुख ने सभी कलाकारों को अपने निजी आतिथ्य से सम्मानित किया। चरक ऑडिटोरियम में बड़ी संख्या में सेना परिवार के बैठे स्त्रियों पुरुषों ने रामलीला का खूब आनंद उठाया। लीला समापन के बाद कलाकारों से मिलने के लिए बड़ी संख्या में भीड़ लग गई।जहां सिधौना के कलाकारों ने किसी को निराश न करते हुए सभी लोगों के साथ मिलकर अपने अनुभवों को शेयर किया। मुख्य अतिथि जनरल ए के सिंह ने श्रीराम लक्ष्मण की आरती उतार कर लीला का शुभारंभ किया। लीला के सफल मंचन के

बाद सेनाधिकारी ने सभी कलाकारों को सेना द्वारा पदक देकर सम्मानित किया गया। लीला मंचन से प्रभावित होकर सेना प्रमुख ने सभी कलाकारों को मिलिट्री छावनी सहित पूरे पुणे शहर का पर्यटन कराया। वॉर मेमोरियल, सेना म्यूजियम और अन्य दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराया। सेना के जवानों की चार गाड़ियों से स्कॉर्ट कर सभी रामलीला टीम को ऑनर्स दिया गया। उत्तरप्रदेश सरकार के खाद्य सुरक्षा एवं औषधीय प्रसाशन, आयुष राज्यमंत्री डॉ दयाशंकर मिश्रा ने इस टीम प्रेरित कर श्रीराम के आदर्श एवं मानवीय मूल्यों के प्रसार प्रचार के लिए इस टीम को वाराणसी से श्रीराम ध्वजा देकर रवाना किया था। सेना की ओर से सिधौना रामलीला के पूरे टीम को चांदी की तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया।

## मतदाता जागरूकता अभियान में असरदार साबित हुई राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की ड्राइंगरुम बैठक

प्रखर वाराणसी। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ वाराणसी द्वारा मतदाताओं को शत प्रतिशत मतदान करने के लिए जागरूक करने हेतु ड्राइंगरुम बैठक की योजना बनी जो धरातल पर अत्यधिक प्रभावी साबित हो रही है। इस ड्राइंगरुम योजना के तहत राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ब्लॉक इकाई चोलापुर के सदस्यों ने विभिन्न स्थानों पर नियोजित ढंग से मतदाताओं को जागरूक करने हेतु तथा स्वस्थ लोकतंत्र में उनकी जिम्मेदारी के संबंध में जागरूक करने हेतु ड्राइंगरुम बैठक की। यह अपने तरह का अलग नवाचार दिखा जिसमे अभिभावकों और ग्रामसभा के लोगों ने बढ़कर हिस्सा लिया। विभिन्न ग्रामसभा के जनप्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यापकों के इस प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। ब्लॉक अध्यक्ष पवन सिंह ने ड्राइंगरुम बैठक की संक्षिप्त चर्चा करते हुए बताया कि इस बैठक की योजना जिलाअध्यक्ष शशांक पांडेय

द्वारा बनाई गई जिसमें अध्यापक लोग अपने यहां पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों के साथ बैठक करेंगे तथा इसी क्रम में अभिभावकगण शिक्षकों के साथ गांव के अन्य मतदाताओं के साथ बैठक कर उन्हें शत प्रतिशत मतदान हेतु प्रेरित करेंगे। कार्यकारी जिलाध्यक्ष ज्योति प्रकाश ने ग्राम स्तर पर इस योजना को लागू करने में जी जान लगा दिया। ज्योति प्रकाश ने बताया कि ड्राइंगरुम बैठक का प्रभाव इतना पड़ा कि प्रत्येक जागरूक मतदाता अपने परिवार और आस पड़ोस के परिवारों के साथ मतदान करने हेतु जागरूक हो गए। ग्रामसभा के जनप्रतिनिधियों ने संगठन के इस प्रयास को अतुलनीय तथा कारगर बताया। लोगों ने संगठन के पदाधिकारियों की लगन और मेहनत को सराहा और इसका प्रतिफल शत प्रतिशत मतदान के रूप में परिवर्तित करने की शपथ ली। ब्लॉक स्तर पर ड्राइंगरुम बैठक में कार्यकारी जिला अध्यक्ष ज्योति प्रकाश, ब्लॉक अध्यक्ष पवन सिंह, दीपिका सिंह जी, कृष्ण कुमार सिंह जी, धर्मेंद्रजी, गुलाब जी, प्रशांत यादव जी, शशिभूषण सिंह जी तथा ग्रामसभा के जनप्रतिनिधि व अभिभावक उपस्थित रहें।

## मेधावी छात्रों को शील्ड देकर किया गया सम्मानित

पिंडरा। फूलपुर स्थित ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा सीबीएसई की परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले मेधावी छात्रों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अभिभावक शिक्षक बैठक के बाद आयोजित मेधावी सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रबन्धक संजीव सिंह ने कहाकि स्कूली शिक्षा आज भी महत्व रखता है। बिना कोचिंग के स्कूली शिक्षा पर निर्भर बच्चो द्वारा 90 से 100 फीसदी तक अंक लाना यह प्रमाणित करता है। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों के इस सफलता के लिए बधाई दी। बताते चले कि उक्त स्कूल के छात्र छात्राओं का परिणाम हाईस्कूल व इंटर में शत प्रतिशत रहा। 80 से 100 फीसदी के बीच पाने वाले इंटर व हाईस्कूल के मेधावी छात्रों को शील्ड व मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान शिक्षक अनिल सिंह ने स्कूली शिक्षा के अनुभव को शेयर करते हुए कोचिंग के तरफ 12 वी के बाद करने की सलाह दी। धन्यवाद

ज्ञापन प्रिंसिपल रामानुज यादव व संचालन दिनेश सिंह ने किया। इस अवसर पर मनोबोध सिंह, अजय चौबे, विकास सिंह, सुरेश यादव, दीपमाला , नाहिद, सलमा, नीलम मौर्य, आरती सिंह, श्रद्धा , संजीव श्रीवास्तव समेत बड़ी संख्या में अभिभावकगण उपस्थित रहे।

## संक्षिप्त खबरें

### कैशपार ट्रस्ट द्वारा आयोजित फूड प्रोसेसिंग प्रशिक्षण कोर्स का हुआ समापन

प्रखर वाराणसी। स्थानीय क्षेत्र के शिवम अचार मुरब्बा प्रशिक्षण केंद्र पर कैशपार ट्रस्ट द्वारा फूड प्रोसेसिंग कोर्स कराया गया। बतादे कि आर्थिक रूप से कमजोर लड़कियों को फूड प्रोसेसिंग कोर्स कराकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कैशपार ट्रस्ट द्वारा लगातार किया जा रहा है। फूड प्रोसेसिंग प्रशिक्षण का कोर्स करके बच्चियों अपने परिवार का बेहतर तरीके से जीवन यापन कर सकती हैं। इसके अलावा बड़े स्तर पर फूड प्रोसेसिंग कोर्स करने के बाद परिवार का मान सम्मान तो बढ़ता ही है। गांव, देश व प्रदेश स्तर पर भी नाम होता है। जानकारी के अनुसार कैश पर ट्रस्ट द्वारा 50 गरीब बच्चियो को फूड प्रोसेसिंग कोर्स कराया गया। जिसमें उन्हें शनिवार को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रशिक्षण प्रमाण पत्र भी दिया गया। प्रशिक्षण समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मिथिलेश मौर्य के अलावा प्रतीक राणा सिंह, आशुतोष सिंह, कुंदन सहगल, प्रवीण सिंह, श्वेता सिंह, सावित्री सिंह, विभा सिंह व रामानुज सिंह सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

### ठेके के सामने देसी शराब बेच रहे मुनीब को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रखर गोरखपुर। हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के कटसहरा बाजार स्थित देशी शराब की दुकान के सामने झोले में रखकर शराब बेंच रहे मुनीब कौशलेश को हरपुर बुदहट पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार कर लिया, पकड़े गए मुनीब की पहचान कौशलेश पुत्र सिद्धनाथ निवासी आरा चरपोखरी भोजपुर बिहार के रूप में हुई, उंसके पास से 18 पाउच से लगभग 3.5 लीटर

अवैध देशी शराब बरामद हुई। हरपुर बुदहट थाने के उपनिरिक्षक प्रवीण कश्यप ने आरोपी पर थाने में आबकारी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज करवाकर आगे की प्रक्रिया शुरू कर दी है। बताते चले कि बीते शुक्रवार को कटसहरा बाजार स्थित देशी शराब की दुकान पर सुबह 7 बजे ही दुकान के मुनीब द्वारा बैक डोर से शराब बेंची जा रही थी, कुछ लोगो ने वीडियो बनाकर शोशल मीडिया पर वायरल कर दिया था, जिसके बाद चौकस हुई हरपुर बुदहट पुलिस ने मुनीब को देशी शराब की दुकान के सामने से झोले में रखकर शराब बेचते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।

### नम आंखों से आर्मी मैन के पिता रामसबद को अंतिम विदाई

प्रखर शाहगंज जौनपुर। गरीबी की ज्वाला से अपने बच्चों को शिक्षा एवं मेहनत के बल पर देश सेवा में भेजने वाले किसान रामसबद यादव अब आम जनमानस के बीच नहीं रहे। ज्ञात हो कि ग्राम गोल्हागौर निवासी 60 वर्षीय रामसबद यादव का शुक्रवार की मध्य रात्रि लम्बी बीमारी के बाद मृत्यु हो गया। स्वर्गीय रामसबद के तीन पुत्र थे। बड़े पुत्र पवन यादव इंडियन आर्मी में अन्य राजस्थान में देश सेवा में थे एवं पुत्र शिव कुमार यादव तिब्बत चीन सीमा पुलिस बल के जवान है। जो अरुणाचल प्रदेश में थे। लंबी दूरी होने के कारण पुत्रों के

न पहुंच पाने के कारण रविवार को अंतिम संस्कार पिलकिछा घाट पर किया गया। अपने दो पुत्रों को आर्मी में भेजने वाले पिता रामसबद ने अंतिम सांस अपने पैतृक निवास पर ली। दो पुत्रों को देश सेवा में भेजने वाले आर्मी मैन के पिता रामसबद को उनके बड़े भाई सीआईडी विभाग से रिटायर्ड कामता प्रसाद ने मुखाग्नि पिलकिछा घाट पर खचाखच भीड़ के बीच दिया।

प्रखर पूर्वांचल
RNIUPHIN/2016/68754
मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह'
द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस'
सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001
से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित
सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001
सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802
सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।
ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com
सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं